हिंदी विभाग

- अनुक्रमणिका -

कथा

- मेरे सपनों का गोवा १२१
- बचपन १२३
- समय का सदुपयोग १२४
- आदर्श विद्यार्थी १२६
- माँ १२७

कविता

- प्यार १२२
- दोस्ती १२४
- दो गजलें १२५
- ऐसा ही होता है १२५
- तनहाई १२६
- दिल १२७
- भारतीय नारी १२८
- मेरा बचपन १२८
- भगवान की प्रतिज्ञा १२९
- कन्हैया - उसकी अनोखी दुनियाँ। १२९
- 'हमारे गीत' १३०
- पंछी ये मतवाले हैं १३१
- भारत के सपूत १३१
- तुम कब लौटोगे ? १३२
- वो कौन है ? १३२

मेरे सपनोंका गोवा

हर एक का अपना-अपना सपना होता है । हर किसी को लगता है कि काश! उसका अपना सपना सच हो जाए । इस आशा में वह हमेशा लगा रहता है और इसके लिए वह प्रयत्नशील भी रहता है । ऐसा नहीं कि हर आदमी का सपना सच होता है, कभी-कभी कुछ सपने सच नहीं होते ।

मेरा भी एक सपना है । मैं अपने छोटे से राज्य गोवा को खुशहाल देखना चाहती हूँ । मैं गोवा को उस मुकाम पर देखना चाहती हूँ जिसकी किसीने कल्पना तक नहीं की । मैं अपने राज्य को उन्नत बनाना चाहती हूँ । हर बूरी नजर से बचाना चाहती हूँ । एक ऐसा राज्य बनाना चाहती हूँ जो स्वच्छ हो, जहाँ पर किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो, जहाँ सब धर्म के लोग आपस में भाईचारे के साथ हर उत्सव मना सके, जहाँ मनुष्य अपने स्वार्थ के बारे में न सोचकर दूसरों के बारे में भी सोचे, जहाँ झगडा, दंगे-फसाद न हो, हर एक आदमी के पास अपना मकान हो, जहाँ हरियाली ही हरियाली हो, जहाँ हर आदमी भरपेट खाकर, अपने प्यास बुझाकर खुश रह सके । जहाँ गरीबी नाम की चीज ही न हो मंत्री अपना ही स्वार्थ न देखकर दूसरों के बारे में भी सोच सके । हर आदमी दूसरे आदमी को जान सके, जहाँ किसी भी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव न हो, भ्रष्टाचार न हो, किसी भी प्रकार की बीमारी न हो, एक भी अपघात न हो, हर प्रकार की खुशहाली मौजूद हो जिससे आदमी खुश रह सके । लेकिन आज ऐसा लगता है कि मेरा सपना कहीं न कहीं टूट रहा है ।

मुझे लगता है कि मेरा सपना सच होना बहुत मुश्किल है, क्योंकि आज गोवा में अनेक तरह के दंगे-फसाद हो रहे हैं । धर्म के नाम पर कई गुनाह हो रहे हैं। आजकल अपघातों की संख्या दिन-ब-दिन बढती जा रही है । एक ऐसा दिन नहीं जिस दिन कोई अपघात या खून न होता हो । आज का मानव कई तरह की नई नई बीमारियों के जाल में फंसता जा रहा है । इन बीमारियों का अभी तक कोई उपाय न निकाल सका । आज देश में भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है । अनेक नेताओं के काले कारनामें रोज अखबारों में छपते हैं । आजकल फिल्मों को मनोरंजन के रुप में देखा नहीं जाता । आज फिल्में हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई हैं । बच्चे-बूढे सभी फिल्मों की नकल करने की कोशिश करते हैं । किसी लोकप्रिय फिल्म से प्रेरित होकर लूटमार अथवा अपहरण की घटनाएँ सुनने में आती हैं । समाज में व्याप्त कई बुराइयों ओर समस्याओं की जड फिल्में हैं । आजकल साइबर अपराधों की संस्था बढ रही हैं । जनसंख्या बढ रही है । बेकारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है । आज की युवा पीढी ने अपने आसपास की सभी बुराइयों को अपना लिया है । वह आज हत्या, चोरी, तरह-तरह की लूट-पाट, रिश्वतखोरी, झूठ, दगाबाजी, अनैतिक और अमानवीय कृत्यों को करने में जरा भी नहीं हिचकती है । आज की युवा पीढी अनुशासन को त्यागती चली जा रही है । आतंकवाद भी पूरी तरह से फैल चुका है । इसकी जडें दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है । कानून और व्यवस्था के हालात अच्छे नहीं है। कई दल और संगठन जातिवाद, सम्प्रदाय

वाद या हमारे समाज को विभक्त करनेवाले अन्य प्रकार के जहर फैलाते हैं । आज की युवा पीढी का ध्यान नशीली चीजों की ओर आकर्षित हो रहा है । हमारे समुद्र किनारे पहले की तरह नहीं रह गए हैं । पर्यटन के नाम पर हम लोगों ने ही हमारे राज्य को दूषित कर दिया है । हर तरफ प्रदूषण है । गोवा में दूसरे राज्य के लोग आकर रहने लगे और उन्होंने कई तरह के काले कारनामें करना शुरु कर दिया । आज की भी लडकी अकेले बाहर निकलने से डरती है । आज बेटा अपने माँ का खून करने से जरा भी नहीं हिचकता, भाई-भाई का खून बडी आसानी से कर देता है । माँ अपने छोटे बच्चे को कचरे के डिब्बे में फेक देती है । सब लोक पैसों के पीछे भाग रहे हैं । इंसानियत नाम की चीज ही खत्म हो चुकी है।

वर्तमान में गोवा गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है । ऐसी विषम परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि हमारे राज्य का हर नागरिक जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर आगे आए और धर्म, जाति और साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्त हो जाए । आपसी कलह, शत्रुता और नफरत की भावना का नाश करे तभी गोवा का विकास होगा । आज के नेता ही भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं, न्याय देनेवाले ही जब भ्रष्ट हों तब लोगों का क्या होगा ? इसीलिए हमें अपने राज्य के बारे में सोचना चाहिये कि कैसे हम इस राज्य को आगे निकाल सकते हैं । कैसे हम अपनी व्यवस्था बदल सकते हैं । इसका हमें अधिकार है । अगर हर आदमी इस तरह सोचेगा तो मेरा सपना साकार होने में देर नहीं लगेगी । इसलिए हमें हमेशा सच्चाई का साथ देना चाहिए तभी झूठ पूरी तरह से नष्ट होगा । और हमारा सपना सच होगा ।

आसिफा शेख
तृतीय वर्ष, कला

प्यार

'प्यार' छोटा सा शब्द, पर समुद्र से हरी इसकी सच्चाई है । प्यार को वे लोग समझेंगे जिन्होंने प्यार किया है और उसे महसूस किया है ।

प्यार शब्द है जो बहुत ही प्यारा है । इसका हर एक पहलू बडा आकर्षित होता है । प्यार वह चीज है, जो एक गरीब को धनवान बना सकता है । डरीये मत यही सच्चाई है । प्यार में लोग क्या-क्या नहीं करते । प्यार मिलते ही इंसान जी उठता है । और उसे जीवन जिने का मकसद मिल जाता है । हस इंसान को जीवन में एक बार तो प्यार जरूर करना चाहिए । सच मानिये प्यार इंसान को बहुत अच्छा बना देता है । इंसान बुरे से बुरे काम को छोड देगा अगर उसे प्यार करनेवाली मिल जाये । प्यार, इश्क, मोहब्बत आदि चाहे इसके कितने ही नाम हो पर एक ही अर्थ है ।

जो प्यार करते है वह किसी से जरुर डरते है । बाद में सब कुछ ठीक हो जाता है । एक सेकन्ड, एक घंटा-सा लगने लगता है । मिनटों की तो बात मत कीजिये । प्यार में जब झगडा होता है, उसके बाद उन्हें मनाना, उसका न मनना और रूठ कर चले जाना, यह समज लीजिए कि प्यार का हर एक पहलू बडा ही मजेदार होता है ।

अगर आप एक दूसरे से सच्चे प्यार करते है तो आप उनकी बातों को ना नहीं कहेंगे । पर हा 'यह इश्क नहीं आसान यह बहुत रुलाती है, बहुत हँसाती है, बहुत दर्द देती है । आपने कभी प्यार किया नही है ना, पर एक बार महसूस करके देखिये । बिना किसी के डाँटे आप हँस पडेंगे । इसका दर्द सीधे दिल से होता है ।

सविता उ. सतरकर
तृतीय वर्ष, कला

बचपन

किसीने कहा है 'बचपन कितना प्यारा, सबका लाडला होता है । यह बिलकुल सच है । कोई नहीं भूल सकता वे बचपन के दिन । वे तो याद दिलानेवाले होते हैं । इसी तरह मेरे भी बचपन के दिन मुझे याद आते हैं ।

बचपन में मेरा कोई दुष्मन नहीं था । न कहीं दुश्मनी थी । मुझे किसी की जलन नहीं थी । न किसी के लिए हीन भावना थी । हर तरफ प्यार ही प्यार और कई सारे दोस्त थे । उन दिनों पढाई का, स्कूल का टेन्शन नहीं था । पढाई नहीं की तो भी डाँटनेवाला कोई नहीं था । तरह-तरह के आवाज निकालकर मैं बडों को डराती थी । किसी ने डाँटा तो जल्दी गुस्से में होकर बहुत उदास हो जाती थी । और किसी से बातें नहीं करती थी पर मेरे चटपटे स्वभाव के कारण कुछ ही देर बाद मैं पहले जैसे होती थी । चेहरे पर अनोखा तेज था, जिससे कोई भी आकर्षित हो जाता था । बचपन में मुझे ज्यादा सहेलियाँ बनाना पसंद था ।

स्कूल में नहीं गए तो भी माफ था । 'आज सिर में दर्द हो रहा है, पाठशाला नहीं जाऊँगी ऐसा बोलने पर माँ कहती 'बेटा सिर में दर्द ज्यादा हो रहा है तो सो जाओ'' इस तरह मैं घर में रहती थी । और पढाई में ज्यादा रुचि नहीं लेती थी . पर खेल-कूद में ज्यादा भाग लेती थी । जब मैं घुमनें को जाने की जिद्द करती थी । तो मुझे घुमकर लाते थे । जब मस्ती की तो माँ डाँटती थी । तब दादी मेरा पक्ष लेकर बोलती थी । ''उसे क्यों डाँटा, वो अभी छोटी है । उसकी उमर ही मस्ती करने की है, क्या बडी होकर मस्ती करेगी'' ये सुनकर माँ चुपचाप बैठती थी ।

बचपन में मुझे चिन्ता नहीं थी । पर हर तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ थी । हररोज सोने के वक्त दादी कहानियाँ सुनाती थी । और मैं कहानी सुनते-सुनते दादी की गोद में सोती थी । कभी दादी परिओंकी, राक्षसोंकी कहानियाँ तो कभी अपनी बचपन की कहानियाँ सुनाती थी । इस तरह मेरा वक्त गुजर जाता था ।

बचपन में किसी की कमी नहीं थी । बचपन तो मेरे दिल की धडकन है, मैं सांस लेना भूल सकती हूँ पर बचपन को नहीं, वो दिन कितने हसीन, प्यारे थे । जहाँ दुश्मन भी याद करते थे । आज मेरे पास पहले जैसा मस्तीभरा बचपन नहीं है और मेरा पक्ष लेनेवाली दादी भी । आज पढने के अलावा मेरे पास रास्ता नहीं है । सचमुच बचपन स्वर्ग जैसा नया जीवन है । मैं बचपन की राह, इंतजार करती रहती हूँ फिर भी बचपन नहीं आता हैं । कोई लौटा दे मेरे दादी और बीते हुये बचपन के दिन तो कोई मेरे दादी को और बचपन को लौटा नहीं सकता ।

स्वाती बोरकर
तृतीय वर्ष कला

समय का सदुपयोग

समय बहुत ही मूल्यवान वस्तु है । पूरी सावधानी के साथ समय का उपयोग करना चाहिए । हमें बिलकुल भी आलस्य नहीं करना चाहिए । हमें अपना जरा-सा भी समय नष्ट नहीं करना चाहिए । जीवन में हर पल का बहुत ही महत्व है । गया हुआ समय दुबारा वापस नहीं आता है । कहा भी जाता है - 'Time and tide wait for none' अर्थात समय और समुद्र की लहरें किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करते हैं ।

अथर्ववेद में कहा गया है कि समय एक बलवान घोडे के समान है । जो व्यक्ति इसको अपने वश में कर लेता है वही सुखी रहता है । समय प्रतिपल समाप्त होता है । बीता हुआ पल वापस नहीं आता है । हमें एक पल भी व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए । समय का कोई प्रयोग करे या न करे वह तो बीतता जाता है ।

हमें कभी किसी काम को नहीं टालना चाहिए । जो काम हमें इस समय शुरू करना है, उसे हमें उसी समय शुरु न करें तो संभव है कि हम उसको कभी भी शुरू न कर पायें । किसी भी काम को करने का अवसर जीवन में बार-बार नहीं मिलता है । अवसर एक बार हाथ से निकल जाता है तो पछताने के अलावा कुछ भी नहीं रह जाता है ।

हर व्यक्ति को लगता है कि वह समय का, उसके हर पल का पूरी तरह सदुपयोग करे । गप्पे लगाने से या इधर-उधर घुमने से समय बरबाद होता है । प्रात:काल उठते ही हमें दिनभर का अपना कार्यक्रम बना लेना चाहिए । दिनभर का कार्यक्रम इस प्रकार बनाना चाहिए कि हम एक पल भी खाली बेकार न रहें ।

समय बहुत बडी चीज है । जो काम सामने आ जाए, उसे तुरंत करने का प्रयत्न करना चाहिए । कौन कह सकता है कि कब क्या परेशानी आ जाए और फिर वह काम करने का समय मिले या नहीं ।

बुध्दिमान लोगों का कहना है कि प्रत्येक अवसर को पकड लो, 'Hold the opportunity by the forlock behind there is a bald bead' अर्थात समय को सामने के बालों से पकडों, पीछे की चाँद गंजी होती है ।

समय को व्यर्थ करना आत्महत्या के समान है । समय को बरबाद करना बहुत बडा पाप है । समय को व्यर्थ नष्ट करनेवाले व्यक्ति जीवन भर पछताते हुए दिखाई देते हैं । शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है कि – 'मैंने समय को नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।''

दिपाली जल्मी
द्वितीय वर्ष, कला

दोस्ती

रात का समय है आया
चारों ओर है शीतल छाया
फिर आया उषा का समय
सब जगह है उजाला छाया ।

चारों ओर दीप हैं जले
सबके चेहरों पर स्मित है आये
दोस्ती है तुम्हारी ऐसी
न होगी दुनिया में किसी ओर के जैसी ।

होते हैं कभी-कभी एक दूसरे से हम खफा
पर रह नहीं पाते एक दूसरे से जुदा ।

दिपाली जल्मी
द्वितीय वर्ष, कला

दो गजलें

१. उलटे सीधे गिरे पडे है पेड़
रात तूफान से लडे है पेड़ ।

क्या खबर इंतजार है किसका,
सालों: साल से खडे हैं पेड़ ।

कौन आया था, किससे बात हुई,
आँसुओं की तरह झरे हैं पेड़ ।

जिस जगह हैं न टससे मस होंगे
कौन-सी बात पर अडे है पेड़ ।

अपनी दुनिया के लोग लगते हैं,
कुछ छोटे हैं, तो कुछ बडे हैं पेड़ ।

उम्र भर रास्तों पे रहते हैं,
शायरों पर सभी पडे हैं पेड़ ।

अपना मुखडा निहारते मौसम,
आइनों की तरह जडे हैं पेड़ ।

२. आँसू सूखा कहा कहा हुआ,
पानी सूखा तो हवा हुआ ।

जो दर्द हमारे साथ में,
जो रोज रहा वो दवा हुआ ।

घरतक आ पहुँचा है साहब!
इक शख्स राह में मिला हुआ ।

फुलवारी का शौकीन मिला
हर घर पत्थर का बना हुआ ।

दुख के हर एक चौराहे पर
सुख का इक बुत है खडा हुआ ।

कहता है फूंक-फूंक गजलें
शायर दुनिया का जला हुआ ।

दिपाली जल्मी
द्वितीय वर्ष, कला

ऐसा ही होता है

ऐसा ही होता है,
जब प्यार किसी से होता है,
दिल का सुख और चैन,
सब कुछ खो जाता है
ऐसा ही होता है ।

इस दुनिया में प्यार रोग का कोई,
इलाज नहीं होता है,
इसमें कोई हँसता है और कोई रोता है,
ऐसा ही होता है
जब प्यार किसी से होता है .

प्यार दिवाना होता है,
और इसी दिवानगी में,
कुछ-कुछ होता है,
ऐसा ही होता है
जब प्यार किसी से होता है ।

परिणिता नाईक
द्वितीय वर्ष, कला

आदर्श विद्यार्थी

विद्यार्थी अवस्था व्यक्ति के जीवन की नींव हैं । यदि नींव मजबूत होगी तो इमारत भी मजबूत होगी । हर आदर्श विद्यार्थी ही अपने जीवन की इमारत को मजबूत नींव दे सकता है । विद्यार्थी के लिए विद्या ही धन होती हैं । अपनी पढाई-लिखाई के प्रति सतर्क और ईमानदार रहना उसका पहला कर्तव्य है । विद्यालय उसके लिए सरस्वती का मंदिर होता है । वह नियमित रुप से इस मंदिर में जाता है । जब शिक्षक पढ़ा रहे होते हैं, तब वह विनयपूर्वक शिक्षक से पूछता है । वह पाठशाला में दिए गए गृहकार्य को नियमित रुप से करता है ।

विद्यार्थी के जीवन में खेल-कूद का बड़ा महत्त्व है । आदर्श विद्यार्थी खेल-कूद से कभी पीछे नहीं रहता । वह स्कूल में खेले जाने वाले सभी खेलों में भाग लेता है । आदर्श विद्यार्थी किताबी कीडा नहीं होता । वह स्कूल की सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में भी उत्साह से भाग लेता है । अभिनय, संगीत, चित्रकला आदि कलाओं में भाग लेकर वह अपनी प्रतिभा का विकास करता है ।

आदर्श विद्यार्थी के चरित्र में शील, संयम और सदाचार की सुगंध होती है । वह अपने से बडों के प्रति आदर और सम्मान करते हैं । 'सादा जीवन और उच्च विचार'' उसके जीवन का मूलमंत्र होता है । वह हर अनुशासन का पालन करता है । अपने साथियों की मदद करने के लिए वह हमेशा तैयार रहता है । वह समय का सदुपयोग करना जानता है । वह अखबार तथा अच्छी पत्रिकाएं पढ़कर अपने ज्ञान को बढावा देते रहता है ।

इस प्रकार ज्ञानप्राप्ति की नियमितता, अनुशासन, संयम विवेक, उत्साह तथा महत्त्वाकांक्षा जैसे सद्‌गुणों से विद्यार्थी ही आदर्श विद्यार्थी कहा जाता है । आज के दूषित, संस्कारहीन वातावरण में ऐसा आदर्श विद्यार्थी मिलना कठिन है, किंतु यह भी निश्चित है कि आदर्श विद्यार्थी ही देश के भविष्य को सुंदर बना सकते हैं । वे ही भारतमाता के सच्चे सपूत बन सकते हैं ।

अमिरा दि. शिंदे
तृतीय वर्ष, कला

तनहाई

दिल में गम,
आँखों में आँसू
ऐसे में बहते आँसू ही
सहारा बनते गये ।
पुरानी यादें हमेशा
याद आती रही,
उसकी मासूम हँसी
मुझे सताती रही,
ऐसे में झूठी हँसी ही,
सहारा बनती गयी ।
बार-बार खयालों में
आते रहे,
मेरी तनहाई बनके
हमेशा तडपाते रहे,
ऐसे में केवल खामोशी
सारे राज छिपाती गयी ।

दिपाली जल्मी
द्वितीय वर्ष, कला

माँ

दिल से जुडता है रिश्तों से जुडते है परिवार और इस परिवार को संजोए रखती है एक स्त्री जिसको हम माँ कहते है । माँ ममता की मूरत, प्रेम का भंडार भगवान का रुप मिठास का सागर और क्या-क्या शब्द लिखू माँ के बारे में ? माँ की तुलना किसी देवी से कम नहीं है । माँ जब अपने शिशू को अपने गर्भ में नौ महीने रखकर उसे जन्म देती है । तब उसका जीवन, जीवन-मरण के कगार पर होता है । बच्चा जब बोलने लगता है, तब सबसे पहले उसके मुँह से माँ स्वर सुनाई पडता है, और इस माँ शब्द को सुनकर एक माँ को कितनी संतुष्टी मिलती होगी ? इस मधुमय माँ शब्द का परिचय किसी के लिए अनसुना नहीं है ।

मेरी भी माँ ममता की मूरत ईश्वर का रुप है । जो खुद दर्द सहकर सबको खुश रखती है । हमारे हर दुखदर्द को समझती है । जब कभी मैं बीमार पड जाऊँ तो वह दिन रात मेरी सेवा करती है । हमारा परिवार संयुक्त परिवार है, हम सब लोग मिलजुलकर रहते हैं । माँ पूरा घर सँभालती है, हम सब लोगों का ख्याल रखती है । पिताजी की पसंद, नापसंद का ख्याल रखती है । उनकी जरुरतें पूरी करती है । अगर हम बच्चों को थोडासा भी दर्द हुआ तो पूरा घर सर पर उठा लेती है अगर माँ को दर्द हुआ तो मन ही मन में दबाती है पर मुँह से उफ तक नहीं करती ।

माँ ने मेरी हर जरूरतों को पूरा किया है । माँ मेरी दोस्त और सहेली है जिसे मैं अपने दिल की हर बात बताती हूँ । एक बेटी को माँ के सिवाएँ कौन समझ सकता है । लडकी की जिंदगी में माँ न हो तो वह बहुत अकेला महसूस करती है । मेरी इच्छा है कि सारी जिंदगी उनके आँचल में सिर रखकर लोरियाँ सुनती जाऊँ, सुनती जाऊँ ।

जिंदगी में बहुत-सी समस्याओं के निकट है जो माँ से संबंधित है - किसी की माँ बचपन में गुजर गयी या फिर किसी ने अपने बच्चों को छोड दिया होगा । पिताजी उस बच्चे को पाल तो सकते है लेकिन माँ का प्यार नहीं दे सकते । अपने बच्चे की पीडा, दु:ख, दर्द नहीं समझ सकते । उनके मन में वह सहनशीलता नहीं होती है जो एक माँ के अंदर होती है । इसीलिए स्त्री को घर संसार का गहना कहा गया है जो पूरे परिवार को एकत्रित कर एक ही माला में पिरोए रखती है । माँ का महत्त्व अनमोल है । मै माँ को शतश: नमन करती हूँ ।

प्रियंका प्र. शेटकर,
तृतीय वर्ष, कला

दिल

दिल एक आईना है
एक बार टूटने से जोडा नहीं जाता ।

अरमानों को कोई फिर जगाए
अतीत भुलाया नहीं जाता ।

आते हैं पल खुशी के
दर्द भुलाने के लिए ।

वह दर्द जो जुदाई का
भुलाया नहीं जाता ।

लेकिन उन निशानों का क्या ?
जो मिटाने से मिट नहीं जाते

दिल एक आईना है
एक बार टूटने से जोडा नहीं जाता ।

परिणिता म. नाईक
द्वितीय वर्ष, कला

भारतीय नारी

नारी एक ऐसी शक्ती है जिसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती है । भगवान की बनाई चीजों में इसे प्रथम माना जाता है । नारी तो नारी है - सुंदर, सुशील और स्वाभिमान पर भारतीय नारी कुछ अलग है - कुछ खास । सारी दुनियां की नारियाँ है अनोखी । भारत में नारी को बहुत माना जाता है । इसे माँ और देवी कहा जाता है । पर इसका अपमान भी भारत में ही ज्यादा किया जाता है । इसे सती के नाम में जलाया जाता है, सम्मान के बली चढाया जाता है । इसलिए ये अनोखी है - कभी देवी, कभी दुर्भागिन ।

नारी को भगवान ने ऐसी शक्ति दी है कि इसे कितना भी कुचलो, रोंदो-ये मुस्कुराये जाती है, परिवार के लिए कुर्बानी करती है, दिन-रात मेहनत करती हैं और बदले में माँगती है बस परिवार की खुशी, दूसरों की भलाई और अपने लिए प्यार । इसका मानना है कि ये बनाई गई सिर्फ मर्द की खुशी के लिए और ये इसमें बहुत खुश है ।

इन सब बातों में लगता है कि ये डरपोक दबी, शर्मीली है । ये इसकी खुबियाँ है पर अगर जरुरत पडे तो ये चतुर, निडर, शक्तिशाली और खतरनाक भी बन सकती है ।

ये अनपढ हो तो भी सब पढ़े लिखों को सीख दे सकती हैं । ये कमाती भी है पर हर चीज को तरसती भी है । ये परिवार जोड भी सकती है और तोड भी सकती है । ये दोस्ती भी निभा सकती है और दुश्मनी भी ।

कैसी अनोखी है ये भारतीय नारी !!!

प्रियंका प्रकाश शेटकर
तृतीय वर्ष कला

मेरा बचपन

याद आता है मुझे मेरा बचपन
दौडके आयी वो आम के पेड के पास
हवा से झुलती हुई वो डालें
देखकर रह गई मैं ।

कच्चे आम जब नीचे गिरे,
मित्रो के संग इकठ्ठा करे,
खाये हए वे दिन,
गुजर गएँ वे सारे पल ।

आती हैं वे यादे वे पल,
कितना सुंदर था वह जमाना
अब नहीं रहा वह नजारा
न रहे वे पेड वे आम ।

झुलते पेड न रहे न बच्चे
रह गयी प्यारी सी यादें,
अब के बच्चे खोये रहे अंदर
देखते रहते टी. वी. दिन रात ।

अब भी याद आती रहती है ।
सोचती रहती वे बातें
वे दिन, मित्रों के संग
गुजरे पल, मधुर यादें
याद आता है मुझे मेरा बचपन ।

प्रियंका प्रकाश शेटकर
तृतीय वर्ष, कला

भगवान की प्रतिज्ञा

मेरे मार्ग पर पैर रखकर तो देख,
तेरे सब मार्ग न खोल दूँ तो कहना ।

मेरे लिए खर्च करके तो देख,
कुबेर के भंडार न खोल दूँ तो कहना ।

मेरे लिए कड़वे वचन सुनकर तो देख,
कृपा न बरसे तो कहना ।

मेरी तरफ तो आकर तो देख,
तेरा ध्यान न रखूं तो कहना ।

मेरी बातें लोगों से करके तो देख,
तुझे मूल्यवान न बना दूँ तो कहना ।

मुझे अपना मददगार बना कर तो देख,
तुझे सबकी गुलामी से न छुडा दूँ तो कहना ।

मेरे लिए आँसू बहाकर तो देख,
तेरे जीवन में आनंद के सागर न भर दूँ तो कहना ।

मेरे मार्ग पर निकल कर तो देख,
तुझे शान्ति दूत न बना दूँ तो कहना ।

स्वयं को न्यौछावर करके तो देख,
तुझे मशहूर न कर दूँ तो कहना ।

तू मेरा बनकर तो देख,
हर एक को तेरा न बना दूँ तो कहना ।

अमित कुमार दीक्षित
प्रथम वर्ष, कला

कन्हैया
उसकी अनोखी दुनियाँ ।

कन्हैया है नटखट
मचाता है धमा चौकडी
नाच उसका बंदर जैसा
लेकिन ये है उसका बचपना ।

यशोदा का नंदलाल
कन्हैया है बडा चंचल
मैदान चला साथियों के संग
खेला आँख मिचौनी

अंधेरे में चाँद सितारे देखे
क्या जाने मासूस जीवन के सुख दुःख
सोना चांदी रूप तोहफों का
प्यार पाया गोकुल का

अजब है कन्हैया
उसकी अनोखी दुनियाँ ।

मंजली वि. नाईक
प्रथम वर्ष, कला

'हमारे गीत'

Admission के पहले
''आज मैं ऊपर, आसमान नीचे''

Ragging के दौरान
''धक धक करने लगा, मेरा जियरा डरने लगा''

Ragging के दौरान
''आज ना छोडेंगे तुझे, दम दमा दम''

Lecture के दौरान
''सो गया ये जहाँ, सो गया आसमान''

Canteen में
''अपनी तो पाठशाला, मस्ती की पाठशाला''
''लडको का हाल, लडकी मिलने से पहले''
''कोई ना कोई चाहिए, प्यार करने वाला''
''लडको का हाल, लडकी मिलने के बाद''
''शीशा हो या दिल हो, आखिर टूट जाता है''

Exams के पहले
''दुनिया में आये है तो जीना ही पडेगा
जीवन है अगर जहर तो पीनाही पडेगा

Exam के बाद
''मेरी जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया''

Results के पहले
''जाने क्या होगा रामा रे''

Results के बाद
''हो गया सो हो गया, अब यार छोडो''

Back मिलने पर
''दिल के अरमान आँसुओं में बह गये''

Revaluation के बाद
''वो सिकन्दर ही दोस्तों कहलाता है ।
हारी बाजी को जीतना जिसे आता है''

Happnings में
''आ देखे जरा किसमें कितना है दम'

rock show में
''या हू....... चाहे कोई मुझे जंगली कहे''

college के बाद
''पल रहे या ना रहे कल, याद आयेंगे ये पल''

उत्कर्षा नाईक
तृतीय वर्ष, कला

पंछी ये मतवाले हैं

रंग-बिरंगे प्यारे-प्यारे
पंछी ये मतवाले हैं ।
कब कहाँ किस ओर ये,
साथ-साथ उड़ जाते हैं ।
न हीं इनकी कोई-मंजिल,
न हीं कोई इनका ठिकाना,
बस केवल उड़ते हीं जाना ।
छोटे-छोटे तिनको को चुनकर,
ये अपना घर बनाते हैं ।
अपने प्यार और खुशबू से,
इन घरों को वे सजाते हैं ।
लेकिन तूफान के आने पर,
सब तहस-नहस होकर,
सपनों के घर को बिखर जाता है ।
मगर सृष्टि के इस नीयम पर,
जोर किसी का नहीं चल पाता है ।
टूटे हुए दिलों में पंछी,
फिर उत्साह और उमंग भरकर
अपनी दुनियां बसाते हैं ।
अपने बच्चों को उसमें वे,
प्यार और मेहनत का दाना चुगाते हैं ।

श्रुति सिंह
प्रथम वर्ष, कला

भारत के सपूत

मारो-मारो जो चिल्लाकर,
दुश्मन को मार भगाते हैं ।
अपनी चिंता किए बिना वे,
हम सब की जान बचाते हैं ।
वे भारत के वीर जवान,
भारत के सपूत कहलाते हैं ।।

खड़े रहते जो अविचल होकर,
सैकड़ो मुसीबत झेलकर ।
भारत माता की जय के नारे,
मरते दम तक लगाते जो ।
वे भारत के वीर जवान,
भारत के सपूत कहलाते हैं ।।

शत्रुओं के खेमे में घुसकर
शत्रुओं को चने चबवाते हैं ।
बुरी नजर से हमें बचाकर,
खुद शहीद हो जाते हैं ।
वे भारत के वीर जवान,
भारत के सपूत कहलाते हैं ।।

भारत सरकार से वीर चक्र की,
जो ये उपाधि पाते हैं ।
शहीद होकर भी अपने को,
अमर ये कर जाते हैं ।
वे भारत के वीर जवान
भारत के सपूत कहलाते हैं ।।

श्रुति सिंह
प्रथम वर्ष, कला

तुम कब लौटोगे ?

तुमसे ये दूरी सही न जाए
दिल तो धडकता है पर जिया न जाय
चाँद को देखकर भी अब चैन न आए
ख्वाबोमें मुलाकात हो सकती है पर
क्या करुं ये निंद न आए

दिन तो फिर भी गुजर जाता है
पर ये काली रात बहुत तडपाए
चिठ्ठियाँ तो बहुत आती है मगर
कोई खत तुम्हारी खबर न लाए ।

अपना हाले दिल मैं किसे सुनाऊँ
कोई मुझे समज न पाए
होठों पे तो मुस्कुराहाट है
मेरी आँखें दिल का हाल बतलाए ।

मैं नहीं कहती तुम्हें बेवफा
तुम्हारी यादें जो मुझसे वफा कर जाए
तुम इतने दूर रहते हो फिर भी
हर आहट तुम्हारा एहसास दिलाए ।

खुदा से ये फरियाद करते हैं
ये फासले जल्द मिट जाए
तुम हो मेरी आँखों के सामने
और मेरी रुह तुममें समा जाए ।

न जाने कब निकलेगा वो सूरज
जो तेरी रोशनी से मुझे जगा जाए
न जाने कब होगी वो शाम
जिसके रंगों में हम दोनों खो जाए ।

तुम्हारी याद जलाए है जो जी
वक्त के साथ कहीं बुझ न जाए
तुम कब लौटोगे
कि ये दूरी अब और सही न जाए ।

प्रियंका प्रकाश शेटकर
तृतीय वर्ष, कला

वो कौन है ?

वो कौन है जो मेरे खयालों में आता है ?
मेरी नींदे चुराता है,
मेरी हर आहट के साथ रहता है ।

किसके खयालों में रहती हूँ मैं
जो मेरी तनहाइयों में भी मुझे
मुस्कराने पर मजबूर करता है ।
कोई न रहते हुए भी किसी के
होने का एहसास दिलाता है ।

वो कोई जो मेरा हर एक लम्हा
खुशियों से भर देता है,
मेरी हर साँस पहचानता है ।

मुझे इन्तजार है उसका जो
मुझे बेखबर करके मेरी
जिन्दगी में समाया है ।

मुझे इन्तजार है उस मुलाकात का
जिसकी सोच मेरे होश उडा देती है ।

वो जहाँ भी है मुझे उसकी तलाश है
वो जो भी है मेरे दिल को उसकी आस है ।

प्रियंका प्रकाश शेटकर
तृतीय वर्ष, कला

मराठी विभाग

- अनुक्रमणिका -

गद्य विभाग

❖ बोन्साय : नैतिकदृष्ट्या योग्य कीङ अयोग्य ? १३५
❖ स्वराज्यप्रेरक - लोकमान्य टिळक.. १३७
❖ माझ्या स्वप्नातील गोवा.. १३८
❖ माझ्या स्वप्नातील गोवा.. १४०
❖ विनोद १४२
❖ वृक्षारोपण - काळाची गरज १४३
❖ आई माई.. १४४
❖ पी. ई. एस. सोडताना..... .... १४५
❖ व्यक्तिमत्व विकास.. १४६
❖ यशस्वी जीवनाची गुरुकिल्ली १४९
❖ बोलणे - एक कला १५१
❖ बोरकरांच्या मराठी कवितेतील गोवा १५३

पद्य विभाग

❖ आयुष्य.. १३६
❖ हिंमत तू हरू नकोस..... .... १३९
❖ आई.. १५०
❖ सगळ्याच गोष्टी १५४
❖ विनोद १५४
❖ खरे प्रेम १५४
❖ ती भेट १५५
❖ पहाटेचं प्रेम.. १५५
❖ मैत्रीण.. १५६
❖ आठवण.. १५६

बोन्साय : नैतिकदृष्ट्या योग्य की अयोग्य ?

बोन्साय! बोन्साय म्हटले की डोळ्यांसमोर एक लहान बुटके, फळांनी फुलांनी लगडलेले झाड येते. बोन्साय ही एक कला आहे जिचा उगम जपान ह्या देशात झाला. ह्या कलेद्वारे एका वृक्षाचे रुपांतर एका छोट्याशा रोपांत करता येते, जे फळे-फुले देते. ही कला जपान संस्कृतीची एक ओळख बनली आहे. ''बोन्साय'' हा शब्द दोन जपानी शब्दांपासून तयार झाला आहे. 'बोन' म्हणजे 'पसरट ट्रे' आणि 'साय' म्हणजे झाड. या शब्दाचा अर्थ आहे, पसरट ट्रे मध्ये वाढणारे झाड.

पसरट ट्रे मध्ये झाडाची लागवड करून त्या झाडाची वाढ खुंटवण्यात येते पण त्या झाडाला उपाशी ठेवले जात नाही. मोराटा नावाचे बोन्साय तज्ञ म्हणतात कि, ''हे एक पाळीव प्राण्यासारखे असते, ज्याला पाणी, सूर्यप्रकाश आणि पोषण पुरवावे लागते.'' बोन्साय ह्या कलेचा प्रसार खूप झपाट्याने झाला. अनेक कृषी विद्यापीठे, शैक्षणिक, धार्मिक संस्था तसेच अनेक महाविद्यालयांनी बोन्साय विषयात खुपच रस घेतला आहे व ह्या विषयाला अभ्यासक्रमात एक महत्त्वाचे स्थान प्राप्त करून दिले आहे.

बोन्साय हे नैतिकदृष्ट्या कितपत योग्य आहे? असा प्रश्न उपस्थित केला जातो. या विषयी मतमतांतरे दिसतात. पण माझे मत आहे की ही कला योग्य नाही. ह्या कलेचा उगम झाला तो कमी जागा असल्यामुळे. पण मुळातच स्वार्थी मानवी स्वभावाने ह्या कलेचा विस्तार केला व झाडांना आपल्या इच्छेप्रमाणे वाढण्यास भाग पाडले.

जरा विचार करा ह्या झाडांप्रमाणे जर माणसांची देखील वाढ खुंटवली तर काय होईल ? माणूस आपली दैनंदिन कामे करू शकेल ? नाही ना! मग वृक्षांच्या बाबतीत अशी निष्ठुरता का? त्यांना देखील जीवन असते, भावना असतात. त्यांचे भाव आपण समजू शकत नाही. म्हणून आम्हाला काय अधिकार त्यांच्या जीवाशी खेळण्याचा ? ह्या कलेत झाडांची पानेमुळे एका ठराविक कालांतराने छाटली जातात. झाडाचे खोड, फांद्या तारेने पाहिजे तशी वळवली जातात, त्याला आकार दिला जातो. फांद्या ठराविक वाढीनंतर कापल्या जातात, त्यांना मुक्तपणे वाढू दिले जात नाही. ज्या वृक्षांचा धर्म आहे, उंच उंच गगनाला गवसणी घालणे, मुक्त पिसाट वाऱ्याशी हितगुज करणे, त्यांना आम्ही मनुष्यप्राणी स्वत:च्या सुखाकरिता ओढून ताणून त्यांची वाढ खुंटवून पिंजऱ्यात बंदिस्त पक्ष्याप्रमाणे ठेवतो.

निरिक्षण केल्यास एक गोष्ट लक्षात येते की बोन्साय ही कला सुशिक्षित उच्चभ्रू माणसांकडून अंगिकारली जाते. अशिक्षित माणसे ह्या पध्दतीचा अवलंब करीत नाहीत. कदाचित त्यांना ही कल्पनाही सहन होणार नाही. एवढे शिक्षण घेऊन काय फायदा? निळ्याशार आकाशात, उंच भरारी घेणाऱ्या गरुड पक्षाचे पंख छाटले तर तो कसा परावलंबी होईल, तशीच परिस्थिती बोन्साय झाडांची होते. आपण भारतीय संस्कृतीचे भोक्ते आहोत, आपल्या संस्कृतीत वृक्षवल्लींना

मानाचे स्थान आहे. पण आजकाल वड, पिंपळासारख्या महत्त्वाच्या झाडांचे बोन्साय करून घरात ठेवले जाते. वटपौर्णिमेला वडाच्या झाडापेक्षा शहरात बोन्साय वडाला पसंती दर्शवली जाते. हे माणसाच्या सुसंस्कृतपणाचे लक्षण की असंस्कृतपणाचे?

तसे बघितल्यास बोन्साय पध्दतीचे अनेक फायदे आहे. कमी जागा वापरून आम्ही मनसपसंत झाडे लावू शकतो. ज्या झाडांचा विस्तार खूप मोठा असतो त्यांना आम्ही आपल्या छोट्याशा घरकुलात सामावून घेऊ शकतो. ही कला झाडांचे संवर्धन करण्यास मदत करते.

पण... आपण फक्त आपल्या फायद्याचा विचार न करता झाडांचा विचार करायला हवा. जी कला आपण साकारतो ती करताना एका जीवाला किती यातना भोगाव्या लागतात ह्याचा विचार करायला हवा. आता तुम्हीच ठरवा की बोन्साय पध्दती कितपत योग्य आहे व अयोग्य आहे ?

जमिनीवर कॉंक्रिटची जंगले उभी करून मोठमोठी झाडे तोडून टाकणारा माणूस दिवाणखान्यात शोभेची वस्तू म्हणून झाडाचे बोन्साय करून ठेवू लागला आहे. आपल्या स्वार्थासाठी चैतन्यदायी झाडांना छाटून त्यांची खुंटलेली वाढ पाहून स्वत:च्या सामर्थ्यावर खुश होऊ लागला आहे. ही गोष्ट नीतिला धरून खचितच नाही असे मला वाटते.

अर्चना प्र. पाटील
तृतीय वर्ष विज्ञान (वनस्पती शास्त्र)

आयुष्य

जे घडले ते सहन करायचे असते
बदलत्या जगाबरोबर बदलायचे असते
आयुष्य असेच जगायचे असते!

कुठून सुरू झाले हे माहीत नसले तरी
कुठे थांबायचे हे ठरवायचे असते!
आयुष्य असेच जगायचे असते !

कुणासाठी काहीतरी निस्वार्थपणे करायचे असते
स्वत:च्या सुखापेक्षा इतरांना सुखवायचे असते
आयुष्य असेच जगायचे असते !

दु:ख आणि अश्रूंना मनात कोंडून ठेवायचे असते
हसता नाही आले तरी हसवायचे असते
आयुष्य असेच जगायचे असते !

पंखामध्ये बळ आल्यावर घरटे सोडायचे असते
आकाशात झेपावूनही धरतीला विसरायचे नसते
आयुष्य असेच जगायचे असते !

मरणाने समोर येऊन जीव जरी मागविला तरी
मागून मागून काय मागितलेस असेच म्हणायचे असते
आयुष्य असेच जगायचे असते !

इच्छा असो वा नसो, जन्मभर वाकायचे असते
पण जग सोडताना मात्र समाधानाने जायचे असते
आयुष्य असेच जगायचे असते !

दिपाली जल्मी
द्वितिय वर्ष कला

स्वराज्यप्रेरक - लोकमान्य टिळक

'स्वराज्य हा माझा जन्मसिध्द हक्क आहे व तो मी मिळविणारच' हा संदेश भारतीयांना देणाऱ्या लोकमान्य टिळकांचे पूर्ण नाव होते 'बाळ गंगाधर टिळक'. २३ जुलै १८५६ ला रत्नागिरी जिल्ह्यात चिखलगावात गंगाधरपंतांच्या घरी त्यांचा जन्म झाला. त्यांच्या आईचे नाव होते पार्वतीबाई. बाळ गंगाधर टिळकांचे सर्व शिक्षण पुण्यात झाले. ते लहानपणापासूनच फार कुशाग्र बुध्दीचे होते. लहानपणी वर्गात त्यांनी एकच शब्द संत, सन्त व सनत् असा तीन प्रकारे लिहिला त्यावर शिक्षकांनी एक शब्द बरोबर धरला व इतर दोन चूक धरले. स्वतंत्र व तेजस्वी प्रज्ञेच्या बाळ टिळकांनी मुख्याध्यापकांकडे तक्रार केली. मुख्याध्यापकांनी त्यांचे सर्व शब्द बरोबर धरले. पुढे ते बी.ए., एल.एल.बी. झाले.

त्या काळातील उच्च शिक्षण घेतलेल्या विद्वानांना सरकारी नोकऱ्या सहज मिळत असत. परंतु त्यांनी हिंदुस्थानाची सेवा करण्याचे व्रत घेतले. पुण्यात विष्णुशास्त्री चिपळूणकर व सुधारकाग्रणी आगरकर यांच्या सहकार्याने त्यांनी न्यू इंग्लिश स्कूल व फर्ग्युसन कॉलेजची स्थापना केली. लोकमान्यांनी 'केसरी' हे मराठी व 'मराठा' इंग्रजी अशी दोन वृत्तपत्रे काढली. लोकांवरील अन्याय व जुलुमाविरुध्द केसरीने टिकेचे आसूड उगारले. 'मराठा' मधील लेखांमुळे आगरकर व टिळकांना ३ महिन्यांचा कारावास घडला. इंग्रजांच्या विरुध्द भारतीय समाज संघटीत होत होता. त्याचवेळी इंग्रजांनी फोडा व झोडा या तंत्राचा अवलंब केला व हिंदू-मुस्लीम यांच्या जातीत दुहीचे बीज पेरले. टिळकांनी हिंदू समाजाला संघटित करण्यासाठी सार्वजनिक गणेशोत्सवास १८९४ मध्ये राष्ट्रीय स्वरूप दिले. त्यानंतर रायगडावर छत्रपती शिवाजी महाराजांची जयंती हा उत्सव सुरू केला.

पुण्याचे कलेक्टर रँड यांच्या अन्यायाने चिडून चाफेकरांनी रँडसाहेबावर गोळी झाडली व या खटल्यात टिळकांना पुन्हा अटक झाली. बंगालच्या फाळणीमुळे महाराष्ट्र व पंजाब यांचा सलोखा वाढला त्यामुळे 'पंजाब केसरी' लाला लजपतराय, लोकमान्य व बंगालचे बिपीनचंद्र पाल ही लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ती लोकांना वंद्य झाली.

१९०८ साली काँग्रेसचे विभाजन झाले. टिळकांनी स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार व राष्ट्रीय प्रशिक्षण या चतु:सूत्रीचा पुरस्कार केला. केसरीने इंग्रजांवर जहाल लेख लिहिले यांच्यावर राजद्रोहाचा खटला भरला. त्यांना सहा वर्षांची शिक्षा देऊन मंडालेच्या तुरुंगात ठेवले. निकाल ऐकल्यावर टिळक म्हणाले, ''पंचांचा निकाल काहीही असो, पण मी निरपराधी आहे अशीच माझी मनोदेवता मला सांगते. जगाचे नियमन करणारी महान शक्ती आहे. मी. स्वतंत्र राहण्यापेक्षा दु:ख भोगल्याने माझे कार्य फोफावेल असे त्या परमेश्वरी शक्तीच्या मनात कदाचित असेल.'' त्यावेळी त्यांनी 'गीता रहस्य' हा ग्रंथ लिहिला.

१९१४ मध्ये टिळक मंडालेच्या तुरुंगातून सुटले. त्याच वेळी त्यांचा भव्य सत्कार करून 'लोकमान्य' ही पदवी बहाल केली. त्यांनी 'होमरूल लीग' ची देखील स्थापना केली. लोकमान्यांनी आम्हाला संपूर्ण स्वराज्य द्या अशी मागणी सरकारकडे केली, तसेच मद्यपान निषेध, जातिभेद व अस्पृश्यता निवारण अश्या सामाजिक सुधारणादेखील केल्या.

लोकमान्य आता थकत चालले होते. त्याही परिस्थितीत त्यांनी सिंध प्रांताचा दौरा केला. कोल्हापूरच्या ताई महाराज दत्तक प्रकरणात त्यांचे बाजूने २१ जुलै १९२० मध्ये निकाल लागला. २० जुलै पासूनच टिळकांना न्यूमोनियाचा ताप झाला, वैद्यकीय उपचारांची शर्थ झाली व अखेरीस भारताच्या या युगपुरुषाचे, कर्मयोगी लोकमान्यांचे ३१ जुलैला मध्यरात्री १९२० मध्ये निधन झाले. म्हणूनच. भारताच्या जनतेच्या स्वातंत्र्यासाठी चंदनाप्रमाणे झिझलेल्या राष्ट्रपुरुष लोकमान्यांना आमचे त्रिवार वंदन !

●

माझ्या स्वप्नातील गोवा

एवढ्या मोठ्या भारत देशाचा एक सर्वात लहानसा भाग म्हणजे गोवा. होय, नावा एवढाच नाजुक आणि लहान. पण जरी लहान असला तरी पूर्ण भारतभर प्रसिध्द आहे. भारतातच कशाला तर संपूर्ण जगात गोव्याचे आपले वेगळे असे स्थान आहे. ज्याला पहावे त्याला गोव्याची ओढ आहे आणि का असू नये ? निसर्गाने नटलेला गोवा एक प्रसिध्द असे पर्यटन स्थळ आहे. गोव्यात आपल्याला शेते, कुळागरे, समुद्र किनारे, देवळे इगर्जी इत्यादी पहायला मिळते. गोव्यातल्या समुद्र किनाऱ्यांची तर गोष्टच निराळी, या समुद्र किनाऱ्यांना पाहता क्षणी जणू स्वर्गच पृथ्वीवर अवतरल्यासारखा भास होतो. आणि मग या स्वर्गाचा अनुभव घेण्यासाठी वर्षाचे बाराही महिने देशी, विदेशी पर्यटकांची गोव्यात रांग लागते. अशा या भूमीवर जन्म घेणे म्हणजे भाग्यच वाटते. गोव्याविषयी इंतराना सांगताना देखील अभिमान वाटतो. गोव्याच्या संस्कृतीची तर गोष्टच वेगळी. परशुरामाने निर्माण केलेल्या या भूमीला कला, संस्कृती आणि परंपरेची तर देणगीच लाभली आहे.

अशा या आपल्या अनमोल गोव्याच्या भूमीवर पूर्वी अनेक राजवटींनी राज्य केले. त्यात सर्वात जास्त काळ टिकले ते म्हणजे पोर्तुगीज. याच पोर्तुगीजांच्या तावडीतून मुक्त होऊन आज आपल्या गोव्याला पन्नास वर्षे पूर्ण होत आहेत या स्वातंत्र्य काळातल्या पन्नास वर्षात गोव्यात अनेक लहान मोठे बदल घडले आणि अजूनही घडत आहेत. काही चांगल्या गोष्टी घडल्या तर काही वाईट. पण हल्लीच्या काळात गोव्यात जे काही घडत आहे, ते मनाला अस्वस्थ बनवत आहे. लोकांचीही गोव्याबद्दलची प्रतिक्रिया बदलू लागली आहे. एकेकाळी गोव्याबद्दल वाटणारा अभिमान आता कमी होऊ लागला आहे. आज गोव्यात जिकडे पहावं तिकडे गुन्हे वाढत आहेत. मारामाऱ्या, बंडखोरी, बॉम्बस्फोट, चोरी, घुसखोरी, बलात्कार इत्यादींचे प्रमाण आज वाढले आहे. आजची गोव्याची तरुण पिढी ड्रग्सच्या आहारी जात आहे. गोव्यात येणारे पर्यटकही सुरक्षित नाहीत. दिवसेंदिवस भ्रष्टाचारही वाढत आहे. हे सर्व पाहिल्यावर खूप वाईट वाटते. मनात कींव येते, कधी कधी तर स्वत:चीच लाज वाटते आणि मनात प्रश्न पडतो की हाच आहे का तो पूर्वीचा गोवा ? कुठे गेला तो माझ्या स्वप्नातला गोवा ?

होय माझ्या स्वप्नातला गोवा. माझ्या स्वप्नात गोव्याची एक वेगळीच मूर्ती आहे. अशी मूर्ती जिची किर्ती सर्व जगभर पसरावी असे वाटते. माझ्या स्वप्नातला गोवा म्हणजे एक छोटसंच राज्य. आता आहे तसच पण थोडं बदललेलं. तेही चांगल्यासाठी... ज्यात सर्वात उच्च स्थान कायद्याला दिले जाईल. आणि जो कोणी या कायद्याच्या विरुध्द जाईल त्याला शिक्षा नक्कीच होईल. त्याची दखल घेतली जाईल. कायदा हाती घेणाऱ्या लोकांची गय केली जाणार नाही. आणि या कायद्याचे रखवाले ही आपली कामे पूर्ण निष्ठेने करतील याची जबाबदारी घेतली जाईल.

या माझ्या गोव्यात राहणारे लोक वेगवेगळ्या जातींचे, वेगवेगळ्या भाषांचे, वेगवेगळ्या धर्माचे का असेना पण सर्व जण दुजाभाव विसरून आनंदाने एकत्र राहणार. या माझ्या स्वप्नातल्या गोव्यात राहणाऱ्या प्रत्येक माणसाला इतरांबद्दल आदर, प्रेम असेल. इथे अशा लोकांचे वास्तव्य असेल जे दुसऱ्यांच्या मदतीला धावणार. इथल्या लोकांमध्ये आपल्या राज्याबद्दल प्रेम असणार, आपुलकी असणार, अभिमान असणार. ते एकमेकांशी भांडण्याऐवजी एकत्र येऊन आपल्या गोव्यावर वाईट नजर ठेवणाऱ्या शत्रूंशी झुंज देणार.

माझ्या स्वप्नातल्या गोव्यात 'स्त्री' लाही एक वेगळे स्थान दिले जाईल. आज जरी आपण म्हणतो की स्त्री आणि पुरुष हे समान आहेत. तरीपण प्रत्यक्ष स्थिती वेगळीच असते. अजूनही इथे असे अनेक गांव आहेत

ज्यात स्त्रीची भूमिका फक्त चूल आणि मूल इत्पूर्तीच मर्यादित आहे. पण माझ्या स्वप्नातल्या गोव्यात दोघांनाही समान वागणूक मिळेल. प्रत्येक गोष्टीवर स्त्रीचा तेवढाच हक्क असेल, जेवढा पुरुषाचा असेल. मुलगी जन्माला आली म्हणून रडणाऱ्या आई वडिलांना माझ्या या स्वप्नातल्या गोव्यात चांगलाच चोप मिळेल. तसेच मुलगा आणि मुलगी या दोघांमध्ये फरक करणाऱ्या किंवा मुलगी होणार म्हणून गर्भ नष्ट करणाऱ्या स्त्री व पुरुषाला इथे चांगली शिक्षा मिळेल.

असे म्हणतात की शिक्षणच माणसाला घडवते. मग हे शिक्षण विसरून कसे चालेल? माझ्या स्वप्नातल्या गोव्यात मी शिक्षणाला फार महत्त्व दिले आहे. इथे प्रत्येक माणूस शिक्षित होईल याची खबरदारी घेतली जाईल. मुलांनाही असे शिक्षण दिले जाईल की ज्यामुळे त्यांना त्यांच्या पुढील आयुष्यात नोकरी सहज मिळेल. असे होणार नाही की शिकल्यानंतरही त्यांना नोकरीसाठी वणवण भटकावे लागणार. शिक्षण घेणाऱ्या प्रत्येक मुलाचे भवितव्य उज्वल असणार.

सर्वात मोठी गोष्ट म्हणजे राजकारण. आताचे राजकारण आणि माझ्या स्वप्नातल्या गोव्यातले राजकारण यात खूप फरक असेल. ते राजकारण भ्रष्टाचार मूक्त असेल. तिथे निवडून आलेले अधिकारी मंत्री पूर्ण निष्ठेने काम करणारे असणार. त्यांचे फक्त एकच ध्येय असेल ते म्हणजे गोव्याचा विकास, गोव्याची प्रगती.

असा हा माझ्या स्वप्नातला गोवा आहे जिथे सर्व चांगल्या गोष्टींना वाव दिला जाईल, लोकांच्या हिताचा विचार केला जाईल, देशाच्या प्रगतीचा विचार केला जाईल, भ्रष्टाचार नष्ट केला जाईल, गुन्हेगारीला आळा घातला जाईल, ज्यामुळे हा गोवा म्हणजे पूर्वीसारखा सुंदर आणि नंदनवन भूमी होईल. असा आहे माझ्या स्वप्नातला गोवा.

विंदा जी. नाईक
तृतीय वर्ष सायन्स

हिंमत तू हरू नकोस......

वेळ अजून गेली नाही
बेसावध तू राहू नकोस
यश आहे तुझ्या हाती
मागे तू फिरू नकोस

धरला आहेस मार्ग
मध्येच आता सोडू नकोस
ऐकावे जनाचे करावे मनाचे
हे आता तू विसरू नकोस

गाजवायचे असेल शौर्य
तर आळस तू करू नकोस
प्रयत्नांची तू कास धर
फळांची अपेक्षा करू नकोस

ध्येय तुझे निश्चित ठेव
उगाच नौका हाकू नकोस
ध्येयहीन प्रवासामध्ये तू
नशिबावर भार ठेवू नकोस

झेप घे आकाशी
मागे वळून पाहू नकोस
विज्ञानाच्या या युगामध्ये
हिंमत तू हरू नकोस
हिंमत तू हरू नकोस....

दिपाली जल्मी
द्वितिय वर्ष कला

माझ्या स्वप्नातील गोवा

गोवा, गोवा म्हटलं की किती प्रसन्न वाटते नाही? डोळ्यांसमोर येतो तो निसर्गरम्य, देखणा, विविधतेने नटलेला गोवा. खरं तर गोव्याची ही भूमी निसर्गाची देणगी आहे, जिला आपण जपून ठेवायला हवी. एका कडेला समुद्राची छाया तर दुसऱ्या बाजूला सह्याद्री मातेच्या कुशीत एखाद्या गोजिरवाण्या बाळाप्रमाणे बसलेला आहे. मला तर वाटतं अशा या गोव्यात जन्मलेल्या व्यक्तिंनी पूर्वजन्मी काही तरी पुण्य केलं असावं म्हणूनच तर असं हे देवानं दिलेलं सुख आपल्याला लाभलं आहे. बाहेरच्या राज्यात गेले तर कुणीही 'कुठून आलात?' असं विचारलं तर 'गोव्यातून' असं सांगतानाही खूप अभिमान वाटतो व विचारणाराही चांगली वागणूक देतो आणि पर्यटक ही गोव्याला पहिली पसंती देतात.

परवाच माझी एक मैत्रिण माझ्या मनाला धक्काच देऊन गेली. ती गोव्याबाहेरची आहे, मी तिला सहजच विचारलं, 'कसा काय वाटला आमचा गोवा?' पण मी मनात विचारसुध्दा आणला नव्हता की मला असं उत्तर मिळेल. ती मला म्हणाली की राज्यात अतिथी देवो भव: ला महत्व आहे असं सरकार म्हणते, पण बस कंडक्टर आपल्याच राज्यातील लोकांना ही वागणूक देतात का ? आपल्याच गोव्यातील माणसांवर चिडतात, त्रास देतात तर ते काय आम्हा बिगरगोमंतकीयांना चांगली वागणूक देणार? भाषेचाही राज्यात मला त्रास होतो, कोंकणी कळत नसल्यामुळे कंडक्टरची ते चीड आणणारे बोल मनात ठेवावे लागतात. जर फोंडाच घेतलात तर किती दुर्गंधी बघायला मिळते. वर्तमानपत्रात दररोज एक दोन बलात्काराच्या नाहीतर विनयभंगाच्या लाजिरवाण्या गोष्टी वाचायला मिळतात. गोव्यात येण्यापूर्वी मी गोव्याबद्दल मनात खूप मोठा आदर निर्माण केला होता पण इथं येऊन पाहतो तर वेगळंच दृश्य बघायला मिळालं.

एका दृष्टीनं बघितलं तर ते लांच्छनास्पद शब्द ही सत्य होते. सत्य हे नेहमी कटू असते. पण सत्य नेहमी उघडकीस येतंच ना? हे मलाच नाही तर आपणा सगळ्याना समजत असतं आणि त्यासाठीच तर हे चित्र बदलायला पाहिजे. कधीच न करण्यापेक्षा उशिरा का होईना केलेलं बरं नाही कां ? आणि हे आता फक्त म्हणून चालणार नाही त्यासाठी प्रत्येकाने आपल्यापरीने झटले पाहिजे. म्हणतात ना, रडल्याशिवाय आईदेखील दूध पाजत नाही.

मला मान्य आहे की, गोवा आजकाल आपले पाय उंचावर रोऊ लागला आहे. पूर्वीपेक्षा आजची स्थिती खूप बदलली आहे. पण कुठलीही गोष्ट किती चांगली आहे त्याचा प्रत्यय ती गोष्ट अनुभवल्यानंतरच येतो. नाही का? आता शिक्षणक्षेत्राचंच घ्याना. गोव्यातील मुले आजकाल इतकी प्रगती करत असतात पण त्यांना पुढील शिक्षणासाठी सर्व सोयी उपलब्ध असतात का ? कुठूनही शिक्षण घेऊन उच्च पदवी प्राप्त केलीच तर आजकाल नोकरीसाठी दूर जावं लागतं. आपल्या जन्मभूमीवरतीच काम करण्यासाठी लाज वाटते. जास्त वेतन असलेली नोकरी मिळाल्यावर काही मुलं जन्म दिलेल्या आईबापालाही विसरून जातात. शेवटी या अशा जवळचा आधार नसलेल्या आईबापाला वृध्दाश्रमाची नाहीतर दयानंद योजनेची मदत घ्यावी लागते. त्यातही अनेक काटे वरती बिखरलेले असतात. त्यातील जसे जर एखाद्या व्यक्तीला १००० रुपये प्रती महिना मिळत असेल तर काही एजंट एखाद्याला ९०० च रुपये देऊन लुबाडत असतात. हा भ्रष्टाचार कुठंतरी थांबायला हवा. हाच भ्रष्टाचार आजकाल नोकरीसाठीही केला जातो. एखादी साधी कारकुनाचीही नोकरी हवी असेल तरीही पैसे मोजावे लागतातच. परीक्षेची टक्केवारी नाही तर खिशातील पैसे

बघितले जातात. मग असल्या साक्षरतेची, असल्या न्यायदेवतेची काय गरज? ज्यांना खरी गरज असते त्यांची गरज पूर्णच होऊ शकत नाही. काय गरिबालाही श्रीमंत होण्याची स्वप्ने पाहण्याचा हक्क नाही काय ? हे सारं व्यवस्थित करणं हे जनतेचं काम आहे.

आता दुसरं मैत्रीणीचंच वाक्य घ्या 'अतिथी देवो भव:' या वाक्याप्रमाणे वावरायचे सोडून पर्यटकांनाच काय तर गोव्यातीलच माणसांना एखाद्या शत्रूसारखे वागवले जाते. उदाहरण म्हणजे, आमच्यासारख्या महाविद्यालयाच्या विद्यार्थ्यांना बसवाले अर्धी तिकीट म्हणून बसमध्येही घ्यायला टाळाटाळ करत असतात आणि घेतलंच तर, देवा ! पुन्हा या बसमध्ये येणारच नाही असं आम्हाला म्हणायला लागल्याशिवाय राहत नाही पैशासाठीच तर प्रवाशांना कोंडून बसमध्ये भरतात की दारवाज्यावरही पाय ठेवण्यासाठी जागा शिल्लक नसते तरी ही 'फुडें चल गो/रे' किंवा 'सारखो रावपाक कळना रे तुका ?'' अशी वाक्ये ऐकायला मिळतात. एखादा नवीनच प्रवासी आढळला तर त्याला लुबाडायला मागेपुढे बघत नाहीत. परवाच अशीच एक बातमी डोळ्यांसमोर घडली, पण त्या माणसाने R.T.O. ला फोन करून उरलेले तिकीटाचे पैसे परत घेतले. खरंच दाद द्यायला हवी अशा माणसांना तरच या गोमंतकाचा कायापालट होऊ शकणार.

आज काल तर जिकडे तिकडे दुर्गंधीचेही प्रकार बघावयास मिळतात. पाहताना असं वाटतं की एक दिवस हा कचराच आपल्यावर हक्क गाजवणार. आजकालच्या या धावपळीच्या युगात कचरा तयार करण्यासाठी प्रत्येकजण पुढे असतो नाही, नाही म्हणता न सोसवेल एवढा कचरा उत्पन्नही करतो व नंतर त्याची योग्यप्रकारे विल्हेवाट मात्र लावायला विसरतो किंवा तशास वेळ मिळत नाही हे कारण असतं. पंचायत वा नगरपालिका ह्या कचरा विल्हेवाटीकडे लक्ष देत नाहीत. खरं तर आपल्या घरातील कचऱ्याची विल्हेवाट घरातच लावली तर त्यात काय बिघडलं ? ज्या वस्तूची खरंच लावता येत नाही ती गोष्ट नगरपांलिकेवर सोपवायची. खरं तर ह्या कचऱ्यावरून वर्तमान पत्रे गाजत असतात. दुसरी गोष्ट वर्तमानपत्रात बघावयास मिळते ती खुनखराबा, बलात्कार, चोरी, मारहाण, अपघात ह्या गोष्टींवरून आपण खरंच विचार करायला हवा. खरंच गोव्याची जनता सुरक्षित आहे काय ? पोलिस आपलं काम व्यवस्थित निभावून घेतो काय ? आणि जरी मन लावून काम करीत असले तरी अपुरी साधन सुविधा आड येते. गोव्याची नारी सुशिक्षित झाली आहे असं म्हणतात तर मन विनयभंग, बलात्कार यासारख्या गोष्टी गोव्यातच वाढत का राहतात ? या सारख्या गोष्टींना कधी आळा बसेल ? कधी एक स्त्री ताठ मानेने जगात कोठेही जाऊ शकेल ? स्कार्लेट सारख्या कितीतरी विदेशी महिलाही याला बळी पडतात. यासाठी स्त्रीने हिम्मत दाखवून लढले पाहिजे. अपघात, मारहाण यासारखे प्रकार आपण आपले मन व्यवस्थितपणे ठेवले तर वाचवू शकतात. वाहन चालवताना अटी पाळून चालवले तर कुठे होणार अपघात ?

आणि हे एवढेच प्रसंग नाहीत तर यासारखे कितीतरी प्रसंग आपल्या गोव्याचे नाव उंचावण्याऐवजी खाली पाडण्यास कारणीभूत असतात. जर गोव्याची प्रगती व्हायला हवीच तर क्रिडा, शिक्षण क्षेत्र, तसेच नेत्यांच्या विचारामध्येही काही बदल व्हावेच लागतील. जर आता पर्यटन क्षेत्रच घेतले तर किनाऱ्यांची साफसफाई असावी लागणार आणि त्यासाठी पाणीप्रदूषणावर लक्ष केंद्रित करावे लागणार. किनाऱ्यावरच्या वाढत्या कचऱ्यावर आळा घालावा लागणार. पर्यटकांच्या सुरक्षिततेकडे लक्ष द्यावे लागणार. दुसरी गोष्ट म्हणजे अभयारण्येही गोव्याला चांगली मिळकत देऊ शकतात. यामुळे गोव्याची नैसर्गिक संपत्तीही वाढेल. वायूप्रदूषण थांबवण्यासाठी खाण व्यवसाय, कारखाने, वाहनांचा धूर या सारख्या गोष्टींकडे लक्ष द्यावे लागणार. गोव्यामध्ये सध्या अनेकप्रकारच्या रोगराईत वाढ झाली आहे. ती रोखण्यासाठी सरकारला शक्यतो आपल्या परीने हातभार लावला पाहिजे. म्हणतात

ना, वेळेवर दिलेला एक टाका पुढचे नऊ टाके वाचवू शकतो. पुढची पिढी सुदृढ तसेच निरोगी बनेल. राज्यातील रस्त्यांकडे, वीजपुरवठ्याकडे, रुग्णाकडे, पाणीपुरवठे इत्यांदीकडे सरकारचेही लक्ष असणे गरजेचे आहे. नाहीतर एरवी आपण बघतच असतो की इफ्फीजवळ आली तरच राज्यात रस्त्यांची दुरुस्ती व सजवणूक केली जाते आणि इफ्फी संपली की येरे माझ्या मागल्या असं होता कामा नये. प्रत्येक दिवशी असच वाटलं पाहिजे की इफ्फी चालू आहे पण ती दारुबाजी, आतषबाजी न करता सरकारने ही जनतेचे हित लक्षात घेऊन सुविधा पुरवली पाहिजे, प्रत्येक व्यक्तीला त्याचा हक्क मिळालाच पाहिजे. अबलेची सबला झालीच पाहिजे. जलद सुविधा योग्य त्या वेळीच वापरात आणल्या पाहिजेत आणि पाहिजे तेवढ्याच. नाहीतर आहेत म्हणून कशाला उगीच जास्त वापर करून निसर्गाला हानी पोचवायची?

लाथ हाणू तिथे पाणी काढू ही जिद्द प्रत्येकाने मनात बाळगली पाहिजे. तर मग ही गोमंतक भूमी ही आपल्याला भरभरून देईल. आणि नंतर हा असा निसर्गसंपन्न सर्व सोयी सुविधानी तृप्त असलेला गोवा किती प्रसन्न वाटेल. नावा प्रमाणेच भारतात प्रत्येकाच्या मनात पोहचलेला असेल. आमचा गोमंतक एखाद्या नव्या नवरीप्रमाणे समुद्राचा निळा पदर असलेला, हिरवळतेचा हिरवा शालू नेसून व चकचकीत रोषणाईने सजलेल्या गोव्याला बघून मन किती आनंदाने भरून जाईल नाही? फक्त वरून सुंदर न दिसताच आतली पोकळीही निघून गेलेली असेल. जसे लोक काशीला किंवा कोणत्याही तीर्थक्षेत्री जाण्याची इच्छा व्यक्त करतात तसेच गोव्यातही येण्याची प्रत्येकाची इच्छा असेल, आणि त्यांना आल्यानंतर मात्र आपली भावंड असल्या प्रमाणे मान आपण दिला पाहिजे तरच मग आपण कुठंही जाऊन अभिमानाने म्हणू शकणार 'गोवा हे माझ राज्य आहे.'

कु. दीक्षा सु. देसाई
द्वितीय वर्ष, विज्ञान

विनोद

दिनू : डॉक्टर, प्लॅस्टिक सर्जरी करायला किती खर्च येईल?
डॉक्टर : १ लाख रुपये तरी लागतील.
दिनू : पण डॉक्टर, प्लॅस्टिक आम्ही दिले तर!

☆ ☆ ☆

शिक्षक : राजन, तू आजही पेन आणलं नाहीस.
राजन : सर, मी विसरलो.
शिक्षक : शाळेत, यायचं बरं विसरत नाहीस!
राजन : विसरतो ना ! पण आई आठवण करून देते.

☆ ☆ ☆

एका वर्गात परीक्षा सुरू असते.
शिक्षक : अरे राजू पेपर लिहिताना सारखा मागे का पाहतोस?
राजू : सर, या प्रश्नपत्रिकेतच लिहिले आहे, की मागे पहा.

श्वेता बोरकर
द्वितीय वर्ष - कला

वृक्षारोपण - काळाची गरज

प्राचीन काळापासून मानवाच्या दैनंदिन गरजांची पूर्ति करणारा वृक्ष आज ही मानवी जीवन आणि समाजाच्या अस्तित्वाच्या संदर्भात महत्त्वाची भूमिका बजावीत आहे. वृक्ष केवळ आपले जीवनच प्रभावीत करतात असे नव्हे ते तर आपले अस्तित्व सुरक्षित ठेवण्यासाठी संजीवनी प्रदान करतात.

मानवाची सेवा करण्यात निसर्गाचा फार मोठा सहभाग आहे. वृक्षांपासून आपणास इंधन, इमारती, लाकूड, चारा, अन्नधान्य, भाजीपाला, फळे औषधी इ. प्राप्त होते. भूमी आणि जलसंरक्षणाचेही काम वृक्ष करतात. पाण्याचा दुष्काळ, पूर नियंत्रण, जमिनीची धूप या गोष्टी रोखण्यासाठी वृक्षच मदत करतात. जमिनीचा ओलसरपणा टिकवून ठेवण्यासाठी वृक्षाचा उपयोग होतो. हिमालयाच्या पर्वतीय भागात देवदार, बांबू, साल, साग इ. वृक्ष आढळतात. जमिनीतून पाणी शोषून घेण्याची त्यांच्यात खूप क्षमता असते. याच्या अवतीभवती अनेक बहुउपयोगी टेरोडोफाइटस व ब्रायोफाइटस आढळून येतात हे वृक्ष हिरवेगार असल्यामुळे जंगलात हिरवळीच्या आणि गवतात वाढ होतेच. त्यांची गुणवत्ताही वाढते.

रोगांचे निवारण, उच्चाटन करण्यासाठी ॲलोपथिक आणि आयुर्वेदिक औषधे तयार करण्यासाठी वृक्षांची फुले, फळे, साल, पाने, मुळे, बिया या सर्वांचा उपयोग केला जातो. स्वादिष्ट फळे, सुगंधित फुले, वस्त्र, इंधन, घर यासाठी मानव आजही वृक्षांवरच अवलंबून आहे. वृक्ष व पशूपक्षी हे परस्पर पर्यायी आहेत. जिथे पक्षांची हिरवीगार वनराई असते तेथेंच पक्ष्यांचा किलबिलाट असतो. पक्षी वृक्षावर घरटे बनवतात व आपल्या पिल्लांसह एका कुटुंबाप्रमाणे त्यात राहतात. पशूंना वनांत स्वच्छंद विहार करणे आवडते. त्यांना बांधून ठेवले किंवा जंगलाबाहेर काढले तर ते हिंसक होतात म्हणून सरकारने प्राण्यांबद्दल आपल्या मनांत जवळीक उत्पन्न व्हावी म्हणून प्राणी संग्रहालये काढली. याठिकाणी पशुपक्ष्यांना त्यांना आवडणाऱ्या अनुकुल असणाऱ्या वातावरणात ठेवले जाते. प्राणीसंग्रहालये झाडांनी हिरवीगार ठेवली जातात. पाण्याची सोय त्यात केलेली असते. अशा वातावरणात प्राणी मजेने आपले आयुष्य घालवितात.

पृथ्वी, आप, तेज, वायू, आकाश ही पंचमहाभूते आहेत. यात वायुतत्त्व सर्वांत महत्त्वाचे आहे. कारण वायुशिवाय मानवी जीवनाची कल्पना करणेच अशक्य आहे. ही शुध्द हवा आपणास वृक्षांपासूनच मिळते. हे वृक्ष पृथ्वीवरील समस्त जीवसृष्टीचे आधार स्तंभ आहेत. आपल्या दैनंदिन गरजा पूर्ण करण्याबरोबरच कार्बनडाय ऑक्साईड यासारखे विषारी वायू शोषून घेऊन आपणास प्राणवायू देतात. दुहेरी भूमिका पार पाडणाऱ्या या वृक्षांमध्ये प्रदूषण कमी करण्याची अद्‌भूत क्षमता असते. एका अंदाजानुसार कोणत्याही औद्योगिक घटकाच्या (कारखान्याच्या) चौफेर ५०० मीटर रुंद जागेत वृक्षांची लागवड केलेली असेल तर वातावरणातील सल्फर डाय ऑक्साईड ची साद्रता ७० टक्के आणि नायट्रस ऑक्साईडची सांद्रता ६७टक्के कमी होते. वातावरणातील विषारी वायू शोषून घेण्याबरोबरच कारखान्यांच्या चिमण्यांमधून निघणारा

धूर व राखेचे कण त्यांच्या ठराविक क्षेत्रातच वृक्षांमुळे नियंत्रित केले जातात. वातावरणात सुरक्षित, थंड, सुगंधित करण्यासाठी वृक्षांची सधनता, ध्वनि प्रदूषण कमी करण्यासाठी हिरवी पाने उपयोगी ठरतात.

वृक्षाचे तीन प्रकारात वर्गीकरण करता येते. फुलझाडे, सावली देणारे वृक्ष, फळझाडे या सर्व प्रकारच्या वृक्षांचा एकच उद्देश आहे. मानवाचे कल्याण करणें, आपल्या सभोवतालचा परिसर वृक्ष सुंदर करतातच. वातावरणही सुगंधीत करतात. त्यामुळे शांति आणि आनंद वाटतो. मनुष्य भाव-विभोर होतो. जो फुले तोडतो तो खरोखरच कठोर ह्रदयाचा असला पाहिजे.

इतिहासात असे अनेक राजे आढळून येतात ज्यांनी वृक्षारोपण केले होते. सम्राट अशोकाने रस्ते, नद्या, तलावाच्या दोन्ही बाजूस सावली देणारे फळझाडे लावली होती. शहजहानने काशिरला शालिमार व निशांत उद्यान तयार करविले. एका वृक्षाला दहा पुत्रांच्या बरोबर मानले गेले आहे. आणि त्याचबरोबर असे बजावले आहे की,

क्रियते पत्र विच्छेद: सपुष्प: फलिन: तरो: ।
अनावृष्टी भयं घोरं तस्मिन देशे प्रजायते ॥

(अग्निपुराण)

अर्थात ज्या देशात फुलाफळांची झाडे कापली जातात त्या देशात भयंकर दुष्काळ पडण्याची भीती निर्माण होते. आपल्या आरोग्यासाठी आणि सुरक्षिततेसाठी उभे असणारे वृक्ष आपले जीवनदाते आहेत म्हणून आपण जुन्या वृक्षांची काळजी घेतली पाहिजे. जास्तीत जास्त वृक्ष दरवर्षी लावले पाहिजेत. त्यामुळे दुष्काळ आणि वाळवंटी करण्यासारख्या समस्या नष्ट होऊ शकतील.

प्राची पी. गावस
प्रथम वर्ष विज्ञान

आई

या जगात सर्वात कोण आवडते असा प्रश्न जर कोणी विचारला तर मी मोठ्या अभिमानाने सांगेन की 'माझी आई' खूप खूप आवडते. कारण 'आई' या एकाच शब्दात सारं काही सामावलंय... दुनियेभरचं प्रेम, दुनियेभरची माया, ममता, काळजी आणि धैर्यही जे सारं तू मला देत आलीस... वेळोवेळी माझ्या जीवनाला एक आकार दिलास, माझ्या मनाला संस्काराचा अलंकार दिलास, इतकंच नव्हे तर अशा कित्येक छोट्या छोट्या गोष्टी तू तुझ्या वागण्यामधून आमच्या मनावर बिंबवत आलीस. ज्या आमच्या जीवनात खूपच उपयोगी आहेत. असं म्हणतात की, देवसुध्दा भक्ताकडून भक्तीची अपेक्षा ठेवतो. पण 'आई' तर आपल्या मुलांकडून कसलीच अपेक्षा ठेवत नाही. तुझ्या अशा सगळ्या कष्टांची जाण आहे मला 'आई'! आयुष्यभर तू मला सुखी ठेवण्यासाठी झटत आलीस. हे तुझं सगळं प्रेम ह्रदयात खोलवर जपलेय मी!

श्वेता बोरकर
(द्वितीय वर्ष-कला)

पी. ई. एस. सोडताना.....

मी गेली तीन वर्षे या महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचे जवळून निरिक्षण केले. पहिल्या वर्षात विद्यार्थी सभ्य वाटतात. लेक्चर्स बुडवत नाहीत. मग दुसरी सेमिस्टर सुरू झाली की कानात लेक्चर्स बुडवण्याचे वारं शिरतं. कॅन्टीन, शिवाजी किल्ला या जागेवर बसून मौजमजा करतात. गणपतीच्या देवळांत एरवी ढुंकूनही न बघणारी मुले परीक्षेच्या दिवसात जास्त वेळ तिकडेच घालवतात.

दुसऱ्या वर्षात हीच परंपरा पुढे चालू ठेवतात. लॅक्चर फ्री असली की गडबड गोंधळ घालून अख्खं कॉलेज डोक्यावर घेतात. शेजारच्या क्लासमधील शिक्षकांना शिकवू देत नाहीत. असायनमेंट वेळेवर पूर्ण होणार नाहीत याकडे जातीनं लक्ष देतात. आपणच कॉलेजचे दादा असल्यासारखे वागतात.

तिसऱ्या वर्षात पोहोचल्यावर थोडेसे गंभीर होतात. मित्र/मैत्रिणीचे अभ्यासाचे विषय बद्दलल्यामुळे, वेगळे झाल्याबद्दल सर्वांना वाईट वाटते. पहिल्या दोन वर्षात केलेली मस्ती अनुभवता येत नाही. सतत बिझी असतात हाय, बायच्या पलीकडे वेळच नसतो. लवकर घरी जातात. प्रोजेक्ट प्रोजेक्ट करत नको असलेलं टेन्शन डोक्यावर घेत फिरतात. डिसेंबर आला की मग वर्गात सतत बसण्याची आठवण येते. मित्र/मैत्रिणी सतत हव्या हव्याश्या वाटतात. तसेच शिक्षकांचे लेक्चर्स, बोलणी ऐकावीशी वाटते.

अशा तऱ्हेने मार्चमध्ये पोहोचल्यावर सर्वांना पी. ई. एस मधल्या कॅम्पसची आठवण येते. पी. ई. एस. एक परिवार असल्याचा अनुभव एव्हाना आलेला असतो त्यामुळे आता सोडून जाताना खूप दु:ख वाटते आणखी बी. ए. अभ्यासक्रम पाच वर्षाचा असला असता तर बरं झालं असतं असं शेवटच्या वर्षात पोहोचल्यावर सर्वांना वाटतं. पहिल्या वर्षात तेवढी ओढ नसते पण तिसऱ्या वर्षात पोहोचल्यावर या कॅम्पसची खूप आठवण येते. ते नोटस् मिळविण्याकरिता केलेली धावपळ, परिक्षेच्या दिवसात झेरॉक्सच्या दुकानावर केलेली गर्दी, लेक्चर्स बुडविल्यामुळे पडलेली फायरिंग, कॉलेजमधले घडलेले अनेक प्रसंग, शिक्षक दिसले रे दिसले आयकार्ड घालण्याची, लपण्याची केलेली धडपड, प्रोजेक्ट, असायन्मेंटसाठी शिक्षकांना लावलेला मस्का, ''दुसऱ्यावेळेस वेळेवर आणून देणार'' अशी आश्वासन देणारी मुलं पण दुसऱ्या वेळेसही परत 'ये रे मागल्या' करणारीही विविध वृत्ती प्रवृत्तीची मुलें, मुलांच्या खट्याळपणाकडे दुर्लक्ष करून सतत मायेची पांखर घालणारी शिक्षक मंडळी, सुसज्ज ग्रंथालय आणि जिमखाना या साऱ्या गोष्टींत रमून गेलेल्या प्रत्येक विद्यार्थ्यांची अवस्था संत तुकारामांनी म्हटल्याप्रमाणे 'कन्या सासुऱ्यासि जाये, मागे परतोनि पाहे' अशीच होते.

स्वाती बोरकर
तृतीय वर्ष कला

व्यक्तिमत्व विकास

मानवी जीवनातील 'तारूण्य' ही माणसाला सगळ्यात रोमांचकारी, सामर्थ्यशाली व निर्भय बनवणारी अवस्था आहे. वास्तविक पाहता तारुण्य ही आपल्या जीवनातील सर्वात महत्त्वाची अवस्था आहे. सळसळते रक्त, आकाशाला गवसणी घालण्याची तयारी, मोठमोठी स्वप्ने पाहणे आणि त्यासाठी वाटेल ते करण्याची तयारी असणे ही तारुण्याची लक्षणे आहेत. ज्यांनी ज्यांनी आयुष्यात मोठमोठी स्वप्ने पाहिली आणि त्यासाठी जिवापाड मेहनत घेतली ती माणसे जगात थोर ठरली आहेत.

आपल्या आयुष्याला आकार देण्याचा काळ म्हणजे 'तारूण्य'. या काळात आपण जे जे करतो त्यावरून आपले भविष्य काय असेल हे ठरते. अशा स्थितीत युवापिढीच्या समोर पहिले भेडसावणारे प्रश्नचिन्ह असते ते शिक्षणाच्या माध्यमाचे. या काळात आपण ज्या ज्या गोष्टी शिकत असतो ज्या गोष्टींचे आपल्यावर संस्कार होतात त्यामुळे आपले व्यक्तिमत्व फुलत असते. आजचा तरूण असंतुष्ट असल्याने विध्वंसक कामे करतो असे म्हणतात. पण हे लक्षात घेतले पाहिजे की, तरुण हा नेहमीच असंतुष्ट असतो, नव्हे तो असला पाहिजे मात्र ही असंतुष्टता विधायक कार्याची असली पाहिजे. उदा. भूतकाळात डोकावून बघता काही असामान्य व्यक्तींनी तारुण्यातच अलौकिक कार्य केलेले दिसून येते. अध्यात्माला संस्कृत भाषेत कोंडून ठेवणाऱ्याविरुध्द संत ज्ञानेश्वरांनी बंड केले, या असंतोषातूनच 'अमृतातेही पेजा' जिंकणारी ज्ञानेश्वरी महाराष्ट्राच्या घराघराचे वैभव बनली. थोरल्या माधवराव पेशव्यांनी स्वराज्यांचा ढासळता डोलारा सांभाळला. मदनलाल धिंग्रा, चाफेकर बंधू, कान्हेरे यांनी स्वातंत्र्याच्या वेदीवर आत्मबलिदान केले. आज २१व्या शतकात युवाशक्ती प्रचंड आहे. सध्या राजकरणापेक्षा देशाला समाजकारणाची गरज आहे. सर्व भेद नाहीसे करून भारताला एकसंघ राष्ट्र या पदाला पोचवण्याचे प्रचंड कार्य तरुणांना करायचे आहे व यासाठी त्यांचा व्यक्तिमत्व विकास होणे जरुरी आहे.

आज एकविसाव्या शतकात दूरचित्रवाणी, वाचन, ग्रंथ, संगणक, इंटरनेट, वृत्तपत्र, यासारख्या माध्यमातून आपण आपल्या व्यक्तिमत्व विकासात भर घालू शकतो. ह्या गोष्टी आपल्या आयुष्यात आपला विकास करण्यासाठी अशाप्रकारे मदत करतात

१. **वाचनाचा छंद :** आज २१व्या शतकात वाचनाची आवड अस्तंगत होत चालली आहे. अनेक नवनव्या गोष्टींनी वाचनप्रियतेवर आक्रमण केले आहे. त्यामुळे वाचन, चिंतन यापासून सुशिक्षित माणूस वंचित राहिला आहे. पण मानवी जीवनात वाचनाचे महत्त्वाचे स्थान आहे. भूतकाळात डोकावून पाहायला व भविष्याची स्वप्ने रंगवायला आपणाला ग्रंथच शिकवतात. मागील काळातील सर्व ज्ञान त्यात साठवून ठेवलेले असते. आजच्या जीवनाची पार्श्वभूमी आणि विविध क्षेत्रातील प्रगती आपल्याला पुस्तकांमुळेच जाणून घेता येते. 'पुस्तक' तुमच्याकडून कोणत्याही गोष्टीची अपेक्षा न करता तुम्हाला भरभरुन देतच राहते. ग्रंथ किंवा पुस्तक माणसाच्या वेगवेगळ्या भावभावनांना प्रतिसाद देऊन त्यांच्या मनाचे उदात्तीकरण करत असतो. ग्रंथामुळे माणसाला बहुश्रुतता प्राप्त होते. ग्रंथ माणसाची जगण्याची ताकद वाढवून आयुष्याकडे बघण्याचा एक सकस दृष्टीकोन देतात. ग्रंथ आपले रंजन करतात त्याचप्रमाणे आपल्या बुध्दीवर संस्कारही करतात. मन संपन्न करतात, एवढेच नाही ग्रंथांचा जितका सहवास

मिळत जातो तितक्या प्रमाणात आपण अधिकाधिक प्रगल्भ बनत जातो. जीवन समजून घेण्याची आपली शक्ती वाढते. थोडक्यात ग्रंथ माणसाचा फार मोठा आधार आहे. उत्तम ग्रंथाच्या वाचनाने विलक्षण आनंद मिळतो, मनाला प्रसन्नता लाभते, खूप वाचन करणारी व्यक्ती बहुश्रूत होते. तिच्या व्यक्तिमत्त्वाचा उत्तम विकास होतो म्हणून तर म्हणतात की, ''वाचाल तर वांचाल.''

दूरदर्शनचे फायदे : आज आपल्या देशात दूरदर्शन' हे दूरचे राहिले नाही, तर अगदी घराघरात त्याचा मुक्काम स्थिर झाला आहे. घरातल्या वेगवेगळ्या कारणासाठी दूरदर्शन हवे असते. उदा. प्रवचन, 'टी टाईम', बातम्या इत्यादि त्यामुळे दूरदर्शनवरील कार्यक्रमाचे समाजावर परिणाम होत असतात. विविध कार्यक्रमाद्वारे नव्या-जुन्या चांगल्या साहित्याची ओळख सर्वसामान्यापर्यंत पोहचत आहे. दूरदर्शनमुळे आपला तळागाळातला समाज बऱ्याच नवीन गोष्टी जाणू लागला आहे. प्रेक्षकाला प्राणिजगत व भूगोल याविषयी अपूर्व माहिती 'नॅशनल जिऑग्राफी' ही वाहिनी देते. बातम्यामुळे ती ती स्थळे समोर येतात. सारे जग जवळ येते. दूरदर्शन आपल्याला भरभरून देत आहे, त्यांतून आपण किती व काय घ्यायचे, हे प्रत्येकाने ठरवले पाहिजे.

वृत्तपत्र : दूरचित्रवाणीच्या या युगात वर्तमानपत्रांचे महत्त्व कमी होईल असे विचारवंताना वाटत होते. पण आता दूरचित्रवाणी येऊन ३५ वर्षे होऊन गेली तरी वर्तमानपत्रांचे महत्त्व कमी झाले नाही, उलट वाढलेच आहे. आपल्या देशात १९व्या शतकात वृत्तपत्राचा जन्म झाला. वृत्तपत्राची महत्त्वाची कामगिरी दिसून येते ती 'समाजप्रबोधनाची' समाजातील ज्या ज्या विचारवंताला समाजसेवकाला, राजकीय धुरिणाला लोकजागृती करावीशी वाटली त्यांनी वर्तमानपत्राचाच आधार घेतला. आज वर्तमानपत्रात विविधता आढळते, वेगवेगळ्या भाषांतून वेगवेगळ्या ठिकाणी प्रसिध्द होणारी वृत्तपत्रे समाजाचे मनोगत व्यक्त करत असतात. 'वार्ता', 'बातमी देणे' हे वर्तमानपत्राचे काम असले तरी याहून अनेक मार्गांनी 'वृत्तपत्र समाज घडवत असतो....' घडणाऱ्या घटनावरील टिप्पणी, स्फुटलेखन, अग्रलेख इ. समाजाची विचारधारा धुसळली जाते त्याचप्रमाणे येणारे चित्रपट, नवी पुस्तके यातून बदलणाऱ्या तसेच नव्या विचारप्रणाली वृत्तपत्र समाजापर्यंत पोचवतात. आज लोकशाहीत लोक, अगदी सर्वसामान्य माणूस, आपले मनोगत वृत्तपत्रातून व्यक्त करून सरकारवर म्हणजेच शासनावर अंकुश ठेवू शकतो. म्हणूनच माणसाच्या विकासातील 'वृत्तपत्र' हे एक महत्त्वाचे घटक मानले जाते.

संगणक/इंटरनेट : आज वृत्तपत्राच्या बरोबरीने संगणकसुध्दा काळाची गरज आहे. आज एकही क्षेत्र नाही की जिथे संगणकाने प्रवेश केला नाही. आज संगणक हा आजच्या मानवी जीवनाचा अत्यंत आवश्यक घटक झाला आहे. संगणक हे ज्ञानाचे भांडार आहे. कोणत्याही क्षेत्रातील माहिती 'इंटरनेट' मुळे मिळू शकते. वेबसाइटच्या माध्यमातून माणसे एकमेकांना भेटू शकतात. संगणकामुळे सगळे जग जवळ आले आहे, अंतराळातल्याही घडामोडी संगणकाच्या द्वारे समजून घेता येतात. आज संगणकाने आपले जीवन व्यापले आहे. उदा. बॅंका, पोस्ट वेगवेगळ्या कचेऱ्यांतील कामे संगणकामार्फत होतात. आजकाल सर्व महत्त्वाची कामे जसे परिक्षांचे निकाल हे संगणकावरुन कळतात. अशाप्रकारे पावलोपावली संगणक भेटक असल्यामुळे प्रत्येकाने संगणक शिक्षण घेणे काळाची गरज आहे. संगणक साक्षरता नसेल तर पदवीधर सुशिक्षितही निरक्षर ठरेल. आज संगणक साक्षरता माणसाचे व्यक्तीमत्व फुलवण्यासाठी महत्त्वाचा घटक बनला आहे.

संताची शिकवण :

'बालकाचे साठी । पंते हाती धरिली पाटी ।
तैसा संत जगी । क्रिया करून दाविती अंगी ।'

संत केवळ उपदेश न करता, स्वत:च्या आचरणाचे आदर्श समाजापुढे ठेवून समाजाला सन्मार्ग दाखवतात.

'आधी केले मग सांगितले' या उक्तीप्रमाणे ते वर्तन करतात. संतमंडळीनी बहुजन समाजाला ईश्वरप्राप्तीचा सोपा भक्तिमार्ग तर दाखवलाच, पण भवसागरात राहूनही परमार्थाचे पैलतीर कसे गाठावे याचीही शिकवण दिली साध्या साध्या गोष्टीतून त्यानी जनसामान्यांनाही नेटका प्रपंच करून परमार्थ कसा साधावा याची शिकवण दिली. आम्हाला आज ऑलिंपिक व एशियाड खेळांचे महत्त्व वाटते. पण रामदासस्वामीनी तर बलोपासना, व्यायाम यांचे महत्त्व समाजाला पटवून देण्यासाठी तीनशे वर्षापूर्वी ठिकठिकाणी आखाडे उभारले होते. शक्तिदेवता मारुतीची स्थापना केली होती, व्यायामशाळा सुरू केल्या होत्या. त्यांनी लोकांना अन्यायाचा प्रतिकार करायला शिकवले, प्रयत्नवाद शिकवला, स्वामी विवेकानंद, तुकडोजी महाराज, गाडगे महाराज या राष्ट्रसंतांनी समाजातील दोष घालवून राष्ट्रीय चारित्र्य निर्माण केले. स्वत:च्या आचारांतून जनतेला प्रखर राष्ट्रनिष्ठेचे धडे घालून दिले. जनसेवा हिच ईश्वरसेवा मानणाऱ्या बाबा आमटे, मदर टेरेझा, ताराबाई मोडक या आधुनिक संतानी मानवतेची महान शिकवण समाजाला दिली. संताची शिकवण ही 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' अशीच होती. त्या शिकवणीतील तत्वे अनादी व अनंत होती. कालप्रवाहात समाज बदलतो पण सत्य, नीती, चारित्र्य, मानवता, कर्मयोग, प्रेम, बंधुभाव, दीनदुबळ्यांची सेवा ही संताची तत्वे त्रिकालबाधित व अविनाशी राहतात. असे हे संत म्हणजे खरोखरच समाजाचे सच्चे मार्गदर्शक आहेत. त्यांचा सहवास ईश्वरप्राप्तीपेक्षा अधिक मोलाचा आहे. म्हणूनच आपल्या व्यक्तिगत विकासासाठी संत सहवास अत्यंत महत्त्वाचा आहे.

सुसंगत : ''सुसंगती सदा घडो, सुजन वाक्य कानी पडो''! कवी मयुर म्हणजे मोरोपंत यांनी परमेश्वराकडे केलेली ही प्रार्थना चिरंजीव झाली आहे. 'महाजने येन गत: स एव पथ:।' महाजन म्हणजे मोठी माणसे अनुसरतात तोच खरा मार्ग. मोठ्याच्या सहवासात येणाऱ्या सामान्य माणसानाही महत्त्व प्राप्त होते. वाल्याचा वाल्मीकी कसा झाला ? ही गोष्ट आपल्याला माहीत आहे. हीच संगत जर चांगली नसेल तर त्याचे वाईट परिणाम होतात असे म्हणतात की, Man is known by the company he keeps म्हणूनच 'सवंगडी' कसा असेल यावर त्याचे बरेचसे भवितव्य अवलंबून असते. माणसाच्या व्यक्तिमत्वावर संगतीचा फार मोठा परिणाम होत असतो.

अशा संगणक, दूरदर्शन वृत्तपत्र इत्यादीच्या माध्यमातून आपण आपला व्यक्तिगत विकास नक्कीच साधू शकतो, कारण या गोष्टीतून आपला मनोविकास होत असतो व यातून कोणत्या चांगल्या गोष्टी आपण समाजाच्या गरजांकरता आचरणात आणतो यावर आपले व्यक्तिमत्व ठरते. म्हणूनच म्हणतात की साधे जीवन, उच्च विचार, समाधान आणि सुखाची खाण असतात मनुष्य एक समाजशील प्राणी आहे. सुसंगती आपल्या प्रभावातून दुसऱ्याना प्रभावीत करते. सुसंगतीमुळे बुध्दीची जडता दूर होते, वाणी सत्य बोलते, आदर वाढतो, पापे नष्ट होतात, मन प्रसन्न होते, चोफेर यश मिळते. विद्यार्थी जीवनात संगतीला विशेष महत्त्व आहे कारण याच काळात भविष्याची मुहूर्तमेढ रोवली जात असते. जशा संगतीत विद्यार्थी राहतो तसा तो बनतो. ज्याप्रमाणे शिंपल्यात पडलेला जलबिंदू मोती बनतो तर लोखडांवर पडलेला जलबिंदू नष्ट होतो. त्याचप्रमाणे कुसंगती व्यक्तीला आतून वाईट बनवून तिचा सर्वनाश करते. म्हणून म्हटले आहे. दुर्जन जरी विद्वान असला तरी त्याचा त्याग केला पाहिजे आणि मणी धारण करणारा नाग विषारी नसतो का? संत तुलसीदास म्हणतात 'बिन सत्संग विवेक न होई'। वरील सर्वगुण जर आपण आत्मसात केले तर आपल्या व्यक्तिमत्वाचा सर्वांगाने नक्कीच विकास साधता येईल.

प्राची गणपत जोशी
प्रथम वर्ष (कला)

(निबंध स्पर्धेतील द्वितीय पुरस्कार प्राप्त निबंध)

यशस्वी जीवनाची गुरूकिल्ली

आजच्या संगणकीय युगात यशस्वी असण्याची व्याख्या म्हणजे खूप श्रीमंत असणे अशीच केली जाते. केवळ धनदौलत, बंगले, जमीनजुमला आहे म्हणून त्याना यशस्वी म्हणणे कितपत बरोबर आहे ? संपत्ती कोणत्या मार्गाने कमविली जाते ? हेही तितकेच महत्त्वाचे नाही का ?

समाजात आदर वाटत आहे, अशाही काही व्यक्ती आहेत. त्या कदाचित भरपूर श्रीमंत नसतील म्हणून त्यांना 'यशस्वी' म्हणायचे नाही का? बाबा आमटे, अण्णा हजारे, रघुनाथ माशेलकर इ. या व्यक्ती यसस्वी आहेत ना. तसेच नारायण मूर्ती या व्यक्ती श्रीमंत तितक्याच आदरणीय आहेत. या व्यक्तिनी जीवनात काय आणि कसे केले याचा विचार करणे गरजेचे आहे. 'मरावे परि किर्ती रुपे उरावे.'

वरील व्यक्तींचा विचार करता त्यांनी जीवनात काही समान सूत्रे अंगिकारली आणि ते यशस्वी झालेत.

१. आपल्यातील कमतरतेचा शोध

आपल्यात काय कमी आहे आणि ते मिळविण्यासाठी आपण काय केल पाहिजे, कोणते तत्त्व अंगिकारावे याचा शोध घेणे.

२. स्वावलंबन

जीवनात यशस्वी होण्यासाठी कष्ट करण्याची सवय प्रथमपासूनच लावून घ्यावी. स्वतः केलेल्या कामाचा, कमविलेल्या पैशाचा आनंद हा आगळाच असतो.

३. अपयशाने खचून जाऊ नका :

जीवनात यश, अपयश चालूच असते. यश मिळाले म्हणून त्याचा गर्व न करणे, अपयश आले म्हणून दुःखी न होणे. यशापयशाचे कालचक्र सतत सुरुच असते. अपयश हीच यशाची पहिली पायरी असते.

४. उच्च शिक्षण हेच सर्वस्व नव्हे :

उच्च शिक्षण हे जगाच्या बाजारात केवळ 'गेट वे' असते. तिथे शाळा कॉलेजातील ज्ञान अद्ययावत ठरत नाही. विशेष कौशल्ये, आधुनिक तंत्रज्ञान मिळविण्यासाठी अपार कष्ट, जिद्द यांची आवश्यकता असते. उच्च शिक्षितांनी ज्ञानाचा दिवा सतत तेवत ठेवावा लागतो.

५. माणुसकीचा विसर न होवो :

अधिकार मिळाला म्हणून त्याचा गैरवापर करू नका. हाताखालच्या माणसांना जरुर तेव्हा कडक शब्दात बोलणे, शिक्षा करणे, कधी-कधी आवश्यक असते पण नंतर माणूस म्हणून त्याच्याशी संवाद साधून त्याचे मनोधैर्य वाढवायची संधी द्या.

६. नम्रता, लीनता असावी :

जीवन जगत असताना जीवनात प्रसंगानुरूप, वडिलधाऱ्या मंडळीपुढे, समाजापुढे, लीनता, नम्रता असणे अत्यंत गरजेचे आहे. नम्रता हा ज्ञानाचा खरा दागिना आहे. विद्या विनयेन शोभते ।

७. सर्वोत्कृष्ट होण्याचा अट्टाहास :

आपण आयुष्यात जे जे करू ते सर्वोत्तम होण्यासाठी परिश्रम घेतले पाहिजेत. आपल्यापेक्षा चांगले असणाऱ्या इतरांकडून शिकणे. दुसऱ्याच्या वेगळेपणाचा सतत मागोवा घेणे.

८. संकटाचा सामना करा :

एखादे अपयश, संकट आपल्यासमोर अचानक

उभे राहते. म्हणून ते गोंजारत बसू नका. आलेल्या संकटाला, दु:खाला धैर्याने तोंड द्या. आगीतून तावून, सुलावून निघाल्याशिवाय सोन्याला कधीच झळाळी येत नाही.

९. आपल्या मूल्यांशी कधीही तडजोड करू नका :

आपण बदल स्वीकारायला हवा हे जरी खरे असले तरी आपल्या मूल्यांशी आपण कधीही तडजोड करू नये. आयुष्याची मूल्ये ठरवावी लागतात आणि ती ठरविणे फार कठीण नाही. सचोटी, प्रामाणिकपणा, संवेदनशीलता, समजूतदारपणा ही मूल्ये पिढ्यान पिढ्या टिकून राहिली आहेत. Virtues cannot be taught मूल्ये शिकविता येत नाही. ती आचरणातून दिसून आली पाहिजेत.

१०. प्रतिक्रियेऐवजी प्रतिसाद द्या :

प्रतिक्रिया देतो तेव्हा समोरच्या व्यक्तीला बऱ्याच वेळा आपण हवे तसेच वागत असतो. पण प्रतिसाद देतो तेव्हा शांत मनाने गोष्टीचे मूल्यमापन करून योग्य निर्णय देतो.

शेवटी एक गोष्ट आवर्जून लक्षात ठेवायला हवी की आपल्या यशाचा शिल्पकार आपणच आहोत. जो स्वत:ला नापास करतो त्याला कोणीही पास करू शकत नाही. अशी व्यक्ती कोण ? आपणच. परंतु जो यशस्वी व्हायचे ठरवितो आणि त्यासाठी सर्वस्व झोकून देतो त्याला अडविणारे कोणीच नाही. ज्याची स्पर्धा स्वत:शीच आहे. त्याला कोण अडविणार.

वरील सर्व सूत्रे म्हणजे यशस्वी जीवनाची गुरुकिल्ली होय.

प्रियंका प्रकाश शेटेकर
तृतीय वर्ष कला

आई

आई म्हणजे हास्य
आई म्हणजे प्रेम
सर्वांसाठी झिजायचं
हाच असतो तिचा नेम

आई म्हणजे त्याग
आई म्हणजे माया
साऱ्या घरावरती
तिचीच असते छाया

आई म्हणजे दैवत
आई म्हणजे वात्सल्य
वाटतं फक्त तिच्यासाठीच
सरू नये कधी आपलं बाल्य

आई असते आपली शिडी
आई असते जाईची कांडी
आपलं दु:ख विसरायला
लागतेच ना तिची मांडी

आई सगळीकडे व्यापलेली
तरी कधीच न थकलेली.

दिपाली जल्मी
द्वितिय वर्ष कला

बोलणे - एक कला

माणूस हा बोलणारा प्राणी आहे. बोलल्याशिवाय माणसाचे घडीभरही चालत नाही. माणसाने बोलायचे नाही असे ठरविल्यास त्याचे सर्व व्यवहार ठप्प होतील. तो कमालीचा गुदमरून जाईल आणि हवा जास्त झालेल्या ट्युबसारखा फुटूनही जाईल. खूप बोलणाऱ्या माणसाला काही वेळा मौन पाळांवयास सांगितले तर त्याला शिक्षाच ठरते. बोलणे म्हणजे मनाचे झाकण, हे झाकण काढले की, मन आरपार दिसते.

माणसाचे मूल्यमापन करावयाचे म्हटले तर त्याचे बोलणे तपासणे पुरेसे होईल. तो बोलत असलेला विषय, बोलताना वापरलेले शब्द, आवाज या साऱ्यांमधून माणूस कसा आहे याचा सहज अंदाज बांधता येतो.

जग हे बोलण्यावर चालते. वकील, राजकारणी, विविध कंपन्याचे प्रतिनिधी, व्यापारी, विमावाले, अध्यापक, डॉक्टर इ. व्यावसायिकांनी न बोलता आपला व्यवसाय करावयाचा म्हटले तर त्यांना ते मुळीच जमणार नाही. काहींचे तर बोलणे हेच भांडवल असते. या भांडवलावर ते खूप कमावतात.

केवळ आकर्षक बोलण्यामुळेच काही व्यक्ती लोकांच्या हृदयात कायमचा वास करून राहतात, अटल बिहारी वाजपेयी, सावरकर, आचार्य अत्रे, या लोकांचे बोलणे माणसे मनाचे कान करून तासन तास ऐकत राहत. तहान, भूक, वेळ, व्यवसाय यांचे भान नसे. माणसे जिंकायची असतील तर चांगले बोलता आले पाहिजे.

बोलणे म्हणजे केवळ सभेत बोलणे नव्हे. सभा हे एकाच वेळी अनेकांशी बोलण्याचे ठिकाण. सभेशिवाय माणसाला घरी, बाजारात, ऑफिसात, स्त्रियांशी, पुरुषांशी, मुलांशी, मोठ्यांशी, निरनिराळ्या व्यावसायिकांशी विविध विषयावर बोलणे हा माणसाच्या जीवनाचा अविभाज्य भाग आहे. क्षणाक्षणाला त्याला इच्छा असो वा नसो बोलावेच लागते. बोलायला कोणी नसले तर माणसे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष स्वत:शीच बोलत असतात. प्रकटपणे बोलण्याची हिंमत नसलेली माणसे अप्रकटपणे मनातल्या मनात बोलून समाधान करून घेतात. साहेबाच्या केबीन मधून खाली मान घालून बाहेर पडणारा शिपाई किंवा कारकून, सासूसमोर मुकाट्याने वावरणारी सून मनातल्या मनात बोलून स्वत:चे समाधान करुन घेतात. रस्त्यातून एकटेच जात असलेली माणसे ओठांची हालचाल करतात. हातवारे करतात. हे सारे काही विसरून स्वत:शीच स्वत: बोलण्याचाच प्रकार होय.

माणसाला बोलल्याशिवाय चैनच पडत नाही. काही वेळ जर तो बोलला नाही तर तो बेचैन होतो. बोलणे ही माणसाची भूक आहे. आनंद वाढविण्यासाठी व दु:ख कमी करण्यासाठी आपल्याला बोलावेच लागते. माणूस जर बोलला नाही तर आयुष्य अळणी होईल. जीवनाची सारी चवच निघून जाईल.

बोलणे ही एक कलाच आहे. इतर कलांप्रमाणे बोलणे ही देखील कष्टसाध्य कला आहे. काही वेळेला इतर कला अवगत नसल्या तर माणसाचे दैनंदिन जीवन अडते असे नाही पण बोलण्याची कला नसेल तर अनेक अडचणींना, अडथळयांना, भांडणांना, अबोल्यांना, गैरसमजांना, रागालोभांना आणि नुकसानीला तोंड द्यावे लागते.

गुणगुणणे जसे गायन होत नाही, जमाखर्च वा अन्य लेखन लेखन होत नाही, वेडेवाकडे अंगविक्षेप म्हणजे नृत्य नसते. त्याप्रमाणे माणसाच्या प्रत्येक बोलण्याला कलापूर्ण बोलणे म्हणता येणार नाही. तिला फार तर निरर्थक बडबड म्हणता येईल. बडबड, गप्पा, थापा,

संवाद, भाषण, स्वगत हे सारे बोलण्याचे प्रकार आहेत. या प्रत्येक प्रकारात बोलणे आणि त्यातल्या त्यात आकर्षक बोलणे महत्त्वाचे आहे. आकर्षक बोलल्याशिवाय यातील एकालाही रंगत अथवा मजा येत नाही.

गुन्हेगार काही बोलला नाही, रोग्याने डॉक्टरला काही सांगितले नाही, वकीलाने आपल्या अशिलाला काहीच विचारले नाही, मुलांनी आपली भूक आईला सांगितली नाही आणि वर्गात शिक्षकाने मौन धरले तर काय परिणाम होईल ?

माणसाची जी बोलण्याची क्रिया घडते तिचे मुख्यत: तीन घटक पडतात. शब्द, ध्वनी आणि विचार. या घटकांचा सारख्याच प्रमाणात विचार करावा लागतो. या वेळी एखादा घटक जरी दुर्लक्षिला तरी भलतेच घडते. या तीन घटकांचा अयोग्य वापर करणे बडबड होय. शब्दांचे आणखी एक वैशिष्ट्य म्हणजे त्यांना अर्थ असतो अर्थाना भावना असतात आणि भावनांना संदर्भ असतो.

माणसांचे बोलणे लक्षपूर्वक ऐकले की त्याचे अनेक प्रकार आढळतात. मोठ्याने बोलणे, हळू बोलणे, रागात बोलणे, हसत बोलणे, शुध्द बोलणे, अशुध्द बोलणे, कठोर बोलणे, मृदु बोलणे, कर्कश बोलणे, मंजुळ बोलणे, योग्य बोलणे, अयोग्य बोलणे, सत्य बोलणे, असत्य बोलणे असे बोलण्याचे प्रकार आहेत. माणसागणिक बोलणे बदलते आणि बोलण्यामुळे माणूस बदलतो. कोणी कोणाला काहीच बोलले नाही तर समाजाची गती आणि प्रगती मंदावेल यात जराही शंका नाही.

बोलताना शब्दांचा वापर फार विचारपूर्वक करावा लागतो. शब्दांची वारेमाप उधळपट्टी बऱ्याच वेळा नुकसानास कारणीभूत ठरते. या उधळपट्टीमुळेच विधान सभा, लोकसभा, ऑफिस, घर, बाजार, नातेवाईक, मित्र यांच्यात खडाजंगी होते. गैरसमज पसरतात, तुटतात आणि 'माझं चुकलं' या दोनच शब्दांनी सारं वादळ शमतं. वादळ निर्माण करण्यास आणि वादळ शमविण्यास शब्दच कारणीभूत होतात.

शब्दानंतर बोलताना उच्चाराला जपणे आवश्यक आहे. ''उच्चारावरून विद्वत्ता, आवाजावरून नम्रता आणि वर्तनावरून शील समजते, ''बोलताना शब्दांचे उच्चार स्पष्ट हवेत. अस्पष्ट उच्चार बोलण्याचा अपेक्षित परिणाम करण्यास असमर्थ ठरतात.

बऱ्याच वेळा शब्द शक्तीची जाणीव नसल्यामुळे माणसे तोंडाला येईल ते बोलतात आणि अनेक आपत्तींना तोंड देतात. शब्द टोचतात, शब्द घायाळ करतात, शब्द कधीही भरुन न येणाऱ्या जखमा करतात याची जाणीव झाली तर ती शब्द जपून वापरतील. याबाबतीत पैशापेक्षाही माणसाने शब्दाला अधिक जपले पाहिजे.

शब्दोच्चारणाने भिन्न भाव भावना होतात. छान! वा! शी! अरेच्चा ! इश्य! इत्यादी शब्द भावना व्यक्त करतात. सरज्या, साजणी, छकुल्या, लबाडा हे शब्द म्हणजे भावनेच्या कुप्याच आहेत याचा अधून मधून योग्य असा वापर केला तर जीवनाची चव काही औरच लागेल. जे कितीही पैसा खर्च करून मिळत नाही ते छोट्या शब्दाने मिळते. केवळ पैशाने जीवनाला आनंद मिळतो हे साफ खोटे आहे. जीवनात आनंद परस्परातील प्रेम, प्रगती इत्यादी साधावयाची असेल तर शब्द सृष्टीची आराधना केली पाहिजे. माणूस एखादे वेळेस कंजुष असला तरी चालेल पण शब्दांचा कंजुष असता कामा नये.

शब्द जोडतो, शब्द तोडतो, शब्द मारतो, शब्द तारतो, शब्द कमावतो, शब्द गमावतो, शब्द चेतवतो, शब्द प्रेम करतो, शब्द द्वेष करतो, शब्द उत्साही बनवितो. शब्द निरुत्साही करतो. शब्द सोय करतो. शब्द गैरसोय करतो. म्हणूनच प्रत्येकाने शब्दाला जपले पाहिजे. शब्दाला जागलं पाहिजे. शब्दाचे महात्म्य ज्याला उमजले तोच महात्मा!

प्रियंका शेटेकर
तृतीय वर्ष कला

बोरकरांच्या मराठी कवितेतील गोवा

बा. भ. बोरकर म्हणजेच बाळकृष्ण भगवंत बोरकर. ते गोव्याच्या फोंडा तालुक्यातील बोरी गावचे होते ते गोव्यातील असल्यामुळे त्यांनी महाराष्ट्रात गोव्याचा निसर्ग आपल्या कवितामधून पोहोचविला. जसे

'माझ्या गोव्याच्या भूमीत
सारा माझा जीव जडे
पुरा माझ्या कवनांचा
गंध तेथे उलगडे
माझ्या गोव्याच्या भूमीत
येते चांदणे माहेरा
ओलावल्या लोचनांनी
भेटे आकाश सागरा''

त्यांनी गोव्याच्या भूमीवर, माणसांवर, संस्कृतीवर अत्यंत प्रेम केले. गोवा हेच त्यांच्या कवितेचे प्रेरणास्थान आहे आणि म्हणूनच

''गोव्यातला गांव माझा
ओव्यातच गावा
तिथे जावून राहून
डोळे भरून पहावा'' असेही ते म्हणतात.

निसर्ग - गो - वत्सांशि रमावे
दिवसभर श्रम करीत रहावे
तिखट कढीने जेवून घ्यावे
मासळीचा सेवित स्वाद दुणा

ते वयाच्या १४व्या वर्षी कविता लिहायला लागले. ज्ञानेश्वर, तुकाराम वगैरे संतांचा प्रभाव त्यांच्यावर घडला होता. त्यामुळे त्यांनी 'बाकी म्हणे...' असे अभंगही लिहिले आहेत.

''इतुक्या लौकर येई न मरणा
मज अनुभवूंदे या सुखद क्षणा

असे म्हणणारे बोरकर आपल्याला शब्दभंडार गवसले ते संतपंतांच्या कवितेतून! विशेषत: ज्ञानेश्वरीतून शब्दांच्या सौंदर्याचे आणि संगीताचे मला वेड जडो असेही म्हणतात.

लय आणि ताल हे त्यांच्या कवितेचे खास वैशिष्ट्य. कवितांवर तांबे आणि बालकवींचाही प्रभाव दिसतो. 'सूर्य गेला देशांतरा, 'हिरवे झुंबर', अजून तरुण मी, पिलास फुटूनी पंख 'थंड आले तीव्र वारे' 'तुला कसे कळत नाही,' 'आपल्याच नादात तू' 'जे जे भेटे ते ते दर्पणीचे बिंब' 'उठल्या सुटल्या देऊ नको ग' अशा एकसे एक कविता त्यांनी लिहिल्या आहेत.

म्हातारपणी आपल्याला कवींचे मन श्रध्दाळू ईश्वराकडे तल्लीन झालेले दिसते. त्यांनी 'श्रीक्षेत्र औदुंबरावर ओव्या', 'पांडुरंगाचे परमेश्वर स्वरुप', 'विठ्ठलरुपाची सार्थकता', 'सांगता', 'विठ्ठलाचे लग्न', 'माझी येथेच पंढरी' 'ज्ञानदेवी माझी', 'श्री दत्ता', 'आठवा जिवी रघुराणा' आदि तसेच अभंग आणि ओवी वृत्तातही कविता लिहिल्या. एका जाहीर सभेत त्यांनी सांगितले 'माझा महाराष्ट्र हा ज्ञानोबांचा', विनोबांचा, संतांचा व जे जे काही मंगल, उत्कृष्ट तेथे आहे त्या सगळ्या गोष्टींचा त्यांच्यावर मी भाळलो म्हणूनच महाराष्ट्राला दत्तक गेलो. असा हा गोमंतकीय साहित्यिक गोव्याइतकाच महाराष्ट्राचे वैभव घेऊन जगणारा होता. त्यांच्या जन्मशताब्दी वर्षाच्या निमित्ताने माझी ही शाब्दिक श्रध्दांजली.

स्वाती बोरकर
तृतीय वर्ष कला

सगळ्याच गोष्टी

सगळ्याच गोष्टी
बोलून दाखवायच्या नसतात
सगळेच अश्रू
डोळ्यांत आणायचे नसतात
सगळ्याच नात्यांना
नावे द्यायची नसतात
पूर्ण होणार नाहीत म्हणून
स्वप्नं बघायची सोडायची नसतात.
मनातल्या त्या कोपऱ्यात
ती जपायची असतात...!

विनोद

शिक्षक : जर दिवसा सूर्य उगवला नाही तर काय होईल?

विद्यार्थी : विजेचा खर्च वाढेल

☆ ☆ ☆

पोलिस : ही गाय आणि वासरू कोणाचे आहे ?

मुलगा : गाईचे माहीत नाही, पण वासरू कोणाचे आहे, हे मी सांगू शकतो.

पोलिस : कोणाचे ?

मुलगा : गायीचे !

खरे प्रेम

बोल ना काही तरी असा पाहत का राहतोस ?
स्वप्नात भेटलास तरी बोलायच्या आधी का जातोस

का रे असा पाहत राहतोस ?
पाहता पाहता मला लाजवून जातोस
जाताना मात्र तुझा जीव
माझ्या जवळ ठेवून जातोस

खूपदा तू नसूनही जवळ
असल्याचा भास होतो
तो भास आहे हे कळल्यावर
मात्र जीवाला त्रास होतो

नाही सोडणार साथ तुझी
वचन मी देते तुला
जीवापार प्रेम करते
मी हे सांगू कसे तुला

विश्वासाचे हे अनमोल नाते
तुझे माझे प्रेम अनोखे
विश्वासाचे हे अनमोल नाते
उद्या पासून तुझ्या-माझ्या प्रेमाचे

दृष्ट लागू नये आपल्या नात्याला
तुटू नये जोडी तुझी माझी
एवढेच सांगते मी माझ्या गणरायाला

निवेदिता तदडीकर

ती भेट

तू मी अन् खट्याळ वारा
प्रेमात पडलास निसर्ग सारा
जीवन भरची साथ मिळाली
जुळल्या अंतर्मनाच्या तारा !

खळखळल्या झऱ्यासंगे वाहत होते मन
स्पर्शाने तुझ्या प्रेमळ
झंकारले माझे क्षण!

आतुरलेल्या या हृदयाला
मिठीत तू घेऊन
शांत केलेस मजला
हृदयाशी जपून!

जरी तोल माझा गेला
तू पडता-पडता सावरलस
वाटले कधीही न सरावा
हा शृंगारलेला दिवस!

शब्द पडती अपुरे
तुझ्याशी बोलता बोलता
पण भाव मात्र वाहत जाई
डोळ्यात तुझिया बघता-बघता!

ती भेट अकल्पित
जीवन सौरभ भरणारी
ती दृष्टी प्रेमाने भरलेली
सूर छेडती अंतरी !

त्या खळखळत्या झऱ्यासंगे
मन धरी ताल
संथ वाहणाऱ्या पाण्याचीही
अनोखी वाटे चाल!

अन् तो पाऊसही
अचानकसा कोसळला
चिंब भिजले तुजसंगे
गारवा मिठीत विरघळला !

शरीन मतंगी
द्वितीय वर्ष

पहाटेचं प्रेम

त्या गोड पहाटे येते रे
तुझी आठवण
येशील का तू माझ्या
नयनाच्या पास
माझ्या मनातल्या कळीवर
टाकशील तू ज्या वेळी
तुझी कोवळी नजर
फुलूनी जाईल तेव्हा
माझ्या मनाची कळी
आतुरलेली आहे ही माझी नजर
शोधत आहे फक्त तुझी वाट
आहे हा माझ्या मनाचा विश्वास
तू होशील माझा
त्या पावसाच्या थेंबासारवा
आणि मी समुद्रासारखी

शरीन मतंगी
द्वितीय वर्ष

मैत्रीण

एक तरी मैत्रीण अशी हवी
जरी न बघता पुढे गेलो तरी
मागून आवाज देणारी
आपल्यासाठी हसणारी
वेळ आलीच तर अश्रूही पुसणारी
स्वत:च्या घासातला घास
आठवणीने काढून ठेवणारी
वेळ प्रसंगी आपल्या वेड्या मित्राची
समजूत काढणारी
वाकडं पाऊल पडल्यास
मुस्काटी मारणारी
यशाच्या शिखरावर आपली
पाठ थोपटणारी
भरलेल्या गर्दीत
आपल्याला सैरभेर शोधणारी
आपल्या आठवणीने
आपण नसताना व्याकुळ होणारी
खरच! अशी एक तरी जीवाभावाची
मैत्रीण हवी जी आपणास मित्र म्हणणारी

सोनाली बी. नाईक
तृतीय वर्ष सायन्स

आठवण

लहानपणाची आठवण येते
खूप काहीतरी सांगून जाते
मनात दडलेल्या भावनांना उजाळा देते
विसर पडलेल्या गोष्टींची जाणीव करून देते
ते शाळेतले दिवस आठवतात
जेव्हा मी खूप मजा केली
शिक्षकांनाही त्रास दिला
स्वत:ही खूप काही शिकले
गेले ते दिवस आता
जे कधी परत येणार नाही
पण जेव्हा आठवण येते त्या दिवसांची
डोळ्यांत हळूच येते पाणी
या आठवणीच आपल्याला
मोठेपणाची जाणीव करून देतात
लहानपण संपलं असं सांगून
जबाबदारीची जाणीव करून देतात

विंदा जी. नाईक
तृतीय वर्ष बी. ए.

कोंकणी विभाग

- मांडावळ -

लेख

- ❖ युवा कोंकणी साहित्य संमेलन १५९
- ❖ गोंयचो उत्सव युवा महोत्सव १६१
- ❖ फिल्म फेस्टिवल १६३
- ❖ तरणाट्यांक लागला पिशें-सोशल नेटवर्किंग सायटीचें १६४
- ❖ म्हज्या स्वप्नातलें गोंय १६५
- ❖ दुडवादोंगर कोसळटना १६८

कविता

- ❖ आयचो काळ १६०
- ❖ आवय १६२
- ❖ सपनांतल्या सपनफुला १७१
- ❖ खेळ मोगाचो १७१
- ❖ गोंय १७२
- ❖ गोंयकारांनो १७३
- ❖ अशी कशी गे तूं.....? १७४
- ❖ पावसा पावसा यो यो १७४
- ❖ ऊठ नागरिका ऊठ १७५
- ❖ म्हजें मन १७६

युवा कोंकणी साहित्य संमेलन

११ आनी बारा डिसेंबर २०१० हे म्हज्या जिणेंतले यादिस्तिक अशे दोन दीस जावन आसात. किद्याक जाणात तुमी ? कारण हांवें पयलेंच फावट कोंकणीतल्या युवा साहित्य संमेलनांत वांटो घेतिल्लो. हांवें खंयच भाशेच्या साहित्य संमेलनात आजून पासून वांटो घेवंक नाशिल्लो. हें संमेलन माशेंच्या उच्चमाध्यमिक विद्यालयांत जाल्लें. ह्या संमेलनांतल्यान आमकां खूपश्यो गजाली शिकपाक मेळ्ळयो. हांगा फकत आमका साहित्याचीच न्हय जाल्यार समाजांतल्या वेगळ्या वेगळ्या विशयांचेर व्हडल्या व्हडल्या साहित्यिकांकडल्यान मार्गदर्शन मेळ्ळे तशेंच नव्यो नव्यो इश्टिणी मेळ्ळयो तांचेकडल्यान सामाजीक गजालींचेर, साहित्याचेर तांचे विचार आयकुपाक मेळ्ळे.

११ तारखेक सकाळीं आमी णवांक सगळीजणां फोंड्यां कदंबा बसस्टँडार जमलीं. मागीर मडगांवच्या बसींत बसून मडगांवा गेली. थंयसाकून आमी कारवार बसीत बसून माश्यां गेली. सादारण अकरांक आमी माश्यां पावलीं. माशें हे फोंडेच्यान पयस आशिल्ल्यान थंय पावपाक कळाव जालो. थंय पावलीं तेन्ना उकतावण सुवाळो चालू आशिल्लो. आमी सगळ्यांनी बसका घेतली. तेन्ना कोंकणी भाषा मंडळाचे अध्यक्ष प्रशांत नाईक हांचे उलोवप चालू आशिल्लें.

एकाक उद्घाटन सुवाळो सोपल्या उपरांत सगळ्यांनी जेवण घेतलें. दनपारा अडेज म्हळ्यार सगळ्यांचीं जेवणां आटोपलीं आनी सगळी परत कार्यावळ चलिल्ल्या हॉलांत एकठांय जालीं. थंय राजय पवार हांची खास मुलाखत दवरिल्ली. ती मुलाखत एका वेगळ्याच स्वरुपाची आशिल्ली. हनुमंत चोपडेकार हांणी ती मुलाखत घेतिल्ली. ते मुलाखतीक एक कॉमेडी स्वरुप दिल्लें. मुलाखतींतल्यान प्रेक्षकांचे मनोरंजनूय जातालें आनी राजय पवार हांच्या यशाचे वाटेवयलो प्रवास हाचेबद्दल म्हायतीय मेळटाली. सांजे चार म्हळ्यार ही मुलाखत सोंपली. सगळ्यांनी च्या घेतली आनी ताच्याउपरांत कवी संमेलनाक सुरवात जाली. तरनाट्या कवीच्यो आपल्यो सुंदर अश्यो कांय कविता आमकां सगल्यांक आयकुपाक मेळ्ळयो. कविता आयकतां आयकतां रात जाली. साडे णवांक आमी जेवलीं ताच्या उपरांत सांस्कृतीक कार्यावळ जाली. रातचे दोनांक आमी निदली.

दुसऱ्या म्हणजे १२ तारखेक सकाळी उठून आमी तयार जालीं. सकाळी आमी सगळ्यांनी च्या आनी नाश्ता घेतलो. त्या दिसा मुखेल कार्यावळ आशिल्ली ती म्हळ्यार कार्यशाळा. प्रत्येक साहित्य प्रकाराचे विभाजनानुसार कार्यशाळा दवरिल्ल्यो. नाटकाची, कथालेखन, स्तंभलेखन, कविता लेखन अश्यो. हांव स्तंभलेखक कार्यशाळेंत बशिल्लें. थंय आमका उदय भेंब्रे, संदेश प्रभुदेसाय हांणी स्तंभलेखनाचेर मार्गदर्शन केलें. तांच्यानी आमका स्तंभ म्हणजे किते, तो कसो बरोवप, ताची मांडावळ कशी आसपाक जाय, ह्या सगळ्याचेर बारिकसारिक म्हायती दिली. आमच्यामदल्या कांयजणांनी आपले प्रश्न परिक्षकांक विचारले. तांच्या प्रश्नांक परिक्षकांनी जापोय दिल्यो. दनपारा एकाक कार्यशाळा सोपली. सगळ्यांनी पोटभर जेवणाचो आस्वाद घेतलो. मागीर तीनांक निरोप सुवाळो जालो. तातूंत घेतिल्या स्पर्धांनी स्पर्धेचो निकाल जाहीर केलो. आमच्या महाविद्यालयाच्या स्वाती बोरकर हाका नाटक बरोवपाचे सर्तींत दुसरें इनाम, गौराज तळावलीकार हाका कविता सर्तींत पयले इनाम फावो जाले. कारवारच्यान आयिल्ल्या

कोंकणी भावांनी आपल्यो सुंदर अश्यो कविताय थंय सादर केल्यो कांय भुरग्यांनी आपलो कार्यशाळेतलो अणभव सांगलो. मागीर समेलनाध्यक्षांनी सगळ्यांचे उपकार आठयले.

संमेलनाचो सगळ्यांत निमाणो वाटो आसता तो म्हटल्यार एक लामण दिवो आसता. तो लामणदिवो संमेलन सोपतकच फुडल्या वर्सा संमेलन ज्या महाविद्यालयांत थारायल्लें आसता त्या महाविद्यालयाच्या मुखेल्याकडे तो लामणदिवो सोपयतात. तो लामण दिवो मागीर त्या महाविद्यालयांत हाडप अशी प्रथा आसा. आता येता त्या वर्सा हे संमेलन आमच्याच पी. ई. एस महाविद्यालयांत जावपाचे आसा. त्याखातीर तो लामणदिवो आमच्या महाविद्यालयाच्या मुखेलींकडे दिलो. हांगा संमेलन सोंपलें.

ह्या संमेलनाक वचून म्हाका खूप खोशी जाली ती किदयाक जाल्यार माझी लेखकी वृत्ती जागी जाली. म्हाकाय अशें दिसपाक लागलें की हावेनूय आनीक खूप अशें किदें बरोवपाक जाय. लेखनांतल्यो बारीक बारीक गोष्टी समजून घेवपाक जाय. लेखनांतल्यो बारीक बारीक गोष्टी समजून घेवपाक मेळ्यो. मुखेल म्हणजे अनुभव मेळ्ळो. संमेलनाच्या व्यवस्थापकांनी तर सगळ्यांची व्यवस्था सामकी व्यवस्थित केल्ली. जेवण-खाण, रावप सगळे सामके व्यवस्थित. कोणाकच कसल्या गोष्टींची उणीव भासूना, गैरसोय जावना. कोणाकच कसल्या गोष्टींची उणीव पडूंक ना. फुडल्या वर्सा आमच्या महाविद्यालयांत हे संमेलन जातले तेन्ना आमी सगळी हाच्याकूय बरे तरेन संमेलन पार पाडपाचो यत्न करतलीं. तशेंच सगळ्या तरांच्या सर्तीनी चडात चड प्रमाणांत वांटो घेवन इनामाय मेळयतली. आणि आमच्या पी. ई. एस. महाविद्यालयाची गुडी जैतान परमळत दवरतलीं.

अश्विनी जोग
पयलें वर्स, कला

आयचो काळ

काळ असो आयला आता
खरें उलोवपी पापी जाता
कायद्यान उलोवपी
सुबेज जाता
भ्रश्टाचारी, लाचारी करपी
बरो जाता
तोंडार उलोवपी
नाका कोणाक
फाटल्यान उलोवपी
जाय सगल्यांक
आता काळ असो आयला
फट उलोवप पुण्य जालां ।

प्रियांका प्रकाश शेटकर
पयलें वर्स, कला

‘गोंयचो उत्सव युवा महोत्सव’

‘गोंयचो उत्सव युवा महोत्सव’

हें गर्जनेन सगळे तरनाटे माटवान भितर सरिल्ले अंदुचो यूवा महोत्सव खांडेपार वाठारान कोंकणी भाषा मंडळान घडोन हाडिल्लो. खांडेपार वाठार सामको तरनाट्यांनी भरिल्लो. विंगड विंगड वाठारांतले तरनाटे आप आपले पंगड घेवन ह्या उत्सवांत वांटेकार जाल्ले. ढोल ताशांच्या आवाजांन खांडेपार वाठार सामको फुलून गेल्लो. ह्या महोत्सवांतल्यान आमी तरनाट्यां मदली उमेद आनी एकचारपण पळोवपाक मेळटालें. ढोला ताशांच्या आवाजांत सामको शिगमोच चलिल्ले वरी दिसतालो. गोंयच्या शिगम्यांक जे किदें आमी पळयतात तें आमका ह्या युवा महोत्सवाचे माचयेर पळोवपाक मेळटा.

युवा महोत्सव हो म्हजो पयलोच महोत्सव. जेका हांव वांटेकार जाल्लें. हांवेन पयली शाळेंत आसतना ह्या महोत्सवाबद्दल आयकूंक सुद्धां नाशिल्लें. आमच्या गोयांत तरनाट्या खातीर महोत्सव जाता हें हांवेन पयलेंच फावट जेन्ना हांव कॉलेजान पावलें तेन्ना आयकले. तातून हांवेंय बी वांटेकार जावचे अशे म्हाका दिसलें. म्हणोन हांवूय बी आमच्या कॉलेजीच्या भुरग्यांवांगडा गेलें. थंय पावतकूच वेगळींच रूपां दोळ्यामुखार पळोवपाक मेळ्ळी. ती म्हळ्यार कोणें आपल्या तोंडाक रंग काडिल्लों, कोण शंकर, साधू अशें जावन आयिल्ले. तर थोडी चेडवां कापडां, साड्यो अशी न्हेंसून आयलीं. अशी विंगड विगंड सौगां पळोवपाक मेळ्ळी. हांव हें पयलेच फावट पळयल्यान पळयत उरलें.

माटोव सगळो तरन्याट्यानी गच्च भरिल्लों. ढोला ताशाच्या आवाजान माचयेर चलिल्ल्यांचो आवाज लेगीत आयकूंक यें नासलो. मदीं मदीं आनी तरनाट्यांक सांगचें पडटालें की ‘‘बाबानो मातसो तुमचो आवाज कमी करात.’’ तांच्यानी बंद करतकीच मागेर फुडली कार्यावळा सूरवात जाताली. तशेंच माचेर नाच सुरु जायत जाल्यार आनी विचारुंकूच नाका. वयर माचयेर नाच चलतालोच आनी ताचें सकयल माटवानूय नाच चलतालो. वयर माचये वयलो नाच पळोवचो काय सकयल तरनाट्यांचो शिगमो पळोवचो हेंच एकएकदा कळनाशिल्लें. सकयल तरनाटें केन्ना आनी खैय नाचतात तेंच कळ नाशिल्यान खूर्ची सामाळची पट्टाली. कोण हातान हात घालून नाचतालो तर कोण एका मेकाक खांद्यार घेवन नाचतालो. अशें वेगवेगळें विचित्रूच पळोवपाक मेळटालें. चेड्या वांगडा चेडवांय तांकां व्हडा उमेदीन साथ दिताली.

दोन दिसांचो हो यूवा महोत्सव केन्ना सुरु जावन केन्ना सोपलो तें कळुंकूच ना. ह्या उत्सवाक विंगड-विंगड सर्ती. कोंकणी भाशा मंडळान घडोन हाडिल्यो. जशो की फुगड्याची सर्त, तियात्र, नाटकां अशों विंगड विंगड सर्ती चालूच ह्या सर्तींनी वाटो घेवन तरनाटें आप आपल्या पंगडाक जैत मेळोन दितालें. दोन माची आशिल्ल्यान किदें पळोव आनी किदें नाका अशें दिसतालें. दोनूय वांगडाच पळोवचे अशें म्हाका दिस्तालें. महोत्सवाच्या पयल्या दिसा फुगडी, तियात्र, अशो सर्ती घडल्या. आमका विगंड विंगड तरांचो फुगडी पळोवपाक आनी आयकूंक मेळ्ळयो. हांवे हाचान पयलीं केन्नाच आयकूंक नाशिल्लो. तशेंच तियात्र म्हळ्यार किदें ते म्हाका पळोवपाक मेळ्ळें. तशेंच तरनाट्यांनी सर्तींनी वांटो घेवन आपली कला सादर केल्ली. तें पळोवपाक मेळ्ळें. मदल्या वेळार माटवांत एक वेगळेंच वातावरण निर्माण जाल्लें. फिश पोडांत तरनाट्यानी घातिल्लें चिटारे थंय वाचून दाखोन सगळ्यांचे तासप चालू आसलें. मागीर सांजेच्या वेंळार नाच सर्तीक सुरवात जाली. सकयल माटवान आशिलें तरनाटें घे म्हण नाचपाक लागलें. तेंका नाचता तें पळयता पळयता रात केन्ना जाली तें कळूंकूच ना. अशें तरेन पयलो दीस सोपलो. थंय पयसुल्या भुरग्यांची रावपाची

आनी खाणा जेवणाचीं बी वेवस्था बरे तरेन केल्ली.

दुसऱ्या दिसाची सुरवात परत धोल-ताशाच्या आवाजान सुरु जाली. ऐकणाऱ्याचे कान दुखिल्लें. पूण वाजोवप्याचे हात मात दुखूंक नाशिल्ली. तरनाटें व्हडा उमेदीन वाजयत आशिल्लें, सकाळच्या धा वरांचेर परत सर्तीक सुरवात जाली. पयली माटवान सर्त सुरवात जाली ती म्हळ्यार गाण्याची सर्त हातूंत तरनाट्यांनी थोड्या प्रमाणांत वांटो घेतिल्ला. तशेंच त्या दीस हळदी कुंकू आशिल्ल्यान काय एकवार चेंडवा कापडा न्हेसून केंसांचो आमाडो घालून हळदी-कुंक करताली आनी थंय समज सवाशीण बायल आसत जाल्यार तांका बुडकुल्यो दिताली. हें पळोवपाक एक वेगळीच उमेद येताली.

युवा महोत्सव ही अशी एक माची जी आमका आमची गोंयची संस्कृताय विसरुंक दिना. पूण आयचें तरनाटें आपली संस्कृताय सांडून भयल्या देशांची संस्कृताय आपणायत चल्ल्या पैलींच्या तेंपार कसो फुगड्यांक, धालांक, शीगम्यांक नेट येतालो तसो आता येना. तो उणो जायत चल्ल्या. म्हणोन आयज तरनाट्यांक एकठांय हाडपाची गरज आसा. आयचें तरनाटे हेच फुडलें पूडारी आयच्या तरनाट्यांक जागोवपाची खूप गरज आसा. युवा महोत्सव हो असो एक महोत्सव जीका लागून तरनाटे एकठांय येता. तांचें मदी एकचाराची भावना घडटां हाका लागोन तरी युवा महोत्सव सारक्यो कार्यावळी घडत रावपाक जाय. जाका लागोन तरनाट्यांक किदें तरी शीकपाक मेळटां. आनी आपल्या संस्कृतीची जाणीव जावपाक पावता. म्हाका हो युवा महोत्सव काळजांतल्यान आवडलो. दर वर्सा जाता तो सदी जावचो आनी आमी सदीं एकठांय येवंची अशें दिसताले. म्हाका ह्या महोत्सवातल्यान खूप शो नव्यो गजाली शिकूंक मेळ्ळयो तश्यो पळोवपाकूय मेळ्ळो नव्या इश्ट-इश्टिणींची वोळखी जाल्लो.

स्वेता देसाई
पयलें वर्स, कला

आवय

ती सगळ्यांचे आवडीची
तशीच ती मोगाची
आपल्याक उणे करपी
आनी दुसऱ्याक दिवपी
ती भुरग्यांक सांबळटा
शाळेत शिकूंक घालता
भुरगे जल्माक येतकच
ती उलोवंक शिकयता
भुरग्यांक कितें वायट हें
सगळें ती सांगता
तिचें मन तशेंच काळीज खूब बरें
तिणें तुका दिला तें
तुज्यान तिका दिवं नजो
तिची कितलीय व्हडवीक
सांगून केन्नाच सोंपचीना
तू बरें ना जाल्यार
दोतोरागेर ती व्हरता
आपूण एक मेणवात जावन
आमकां ती उजवाड दिता
ती जावन आसा
म्हजी मोगाची आवय!

प्रियांका प्रकाश शेटकर
पयलें वर्स कला

फिल्म फेस्टिवल

आमच्या पी. ई. एस. महाविद्यालयाक २५ वर्सा पूर्ण जाल्ल्याकारणान फिल्म फेस्टिवल अशी एक ल्हानशी कार्यावळ घडोवन हाडली. 'ओ मारीया' आनी 'पलतडचो मनीस' अशी दोन फिल्मां दाखयलीं. तशेंच हे कार्यावळीक मुखेल सोयरे म्हण राजेंद्र तालक, परेश शेटगावकार, आर. जी. देसाय आनी डॉ. सीमा कामत मानान हाजीर आसले.

राजेंद्र तालक हांचे 'ओ मारीया.' ह्या फिल्मांतल्यान आमकां खूप किदें शिकपाक मेळटा. आयचे तरनाटें कशे व्यसनाधीन जाल्यात तें आमका पळोवपाक मेळटा. तशेंच ते आपल्या आवय-बापायचें कायच सांगिल्लें आयकनात आनी आपणांक जाय ते करतात, आयचो तरनाटो पैशांच्या फाटल्यान लागला तो व्यसनाधीन जाला. पैशांच्या नादाक लागून तो आपल्या आवय-बापायक लेगीत घाणांक दवरपाक फाटी सरना. ज्या आवय-बापायन ताका ल्हानाचो व्हड केले. तांकाच तो कूसकूटावरी करता. आयचो तरनाटो आमच्या गोंयची संस्कृताय विसरपाक लागला. तो भायल्या लोकांची संस्कृताय आपणायत चल्ला, तशेंच दर्यावयलो जागो खूप म्हारग आशिल्ल्यान तो विकता. एके रातीन कसो व्हड जावपाचें सपन तो पळयता. आयच्या तरनाट्याक पैशांचे पिशें लागलां. भायले लोक दर्यावयले जागे विकपा खातीर किदेंय करपाक तयार आसतात. ते मागता तूतले पैशे दिवपाक तयार आसतात आनी आयचो तरनाटो हेंच सपन पळयता.

लक्ष्मीकांत शेटगावकाराचो 'पतलडचो मनीस.' महाबळेश्वर सैल हांच्या (अदृष्ट) कादंबरीचेर आधारीत हें फिल्म जावन आसा. हातूंत आमकां एका मनशाविशीं सांगलां जो मनीस एकलोच एका रानात रावता. ताका कुटुंब ना अशें दाखोवन दिला. तशेंच तो एके पिशे बायलेक कशी सांभाळटा हें दाखोवना दिलां, तशेंच हातून पयलीच्या रुढी-परंपराविशीं दाखोवन दिलां. गावांतले लोक कशे रावतालें हेंय बी आमकां पळोवपाक मेळटा.

ही अशीं दोन कोंकणी फिल्मां. जातुंतल्यान आमकां खूप किदें शिकपाक मेळटा. हीं दोन फिल्मां बी.ए. च्या भुरग्यांनी तर पळोवपाकूच जाय अशें म्हाका दिस्ता. तशेंच (अदृष्ट) ही कादंबरी दुसऱ्या वर्साच्या बी. एच्या भुरग्यांक शिकपाक आशिल्यान तांका ती समजोन घेवपाक चड कळाव लागचोना. अशें वाचतात त्या परस दोळ्यांनी पळयलें चड बरें लक्षांत उरता. फिल्म जावंच्या तीन दीस पयलीं भावे सरान आमकां म्हळ्यार म्हाका, साईशाक, स्वातीक, बालाजीक आनी निलेशाक आपोवन घेवन आमका ह्या फिल्माविशीं सांगलें. आमच्या हातान फिल्माच्यो तिकेटी दिल्ल्यो. टिकेटी घेवन मात आमका बरें दिसलें. पूण मागीर आमच्यो तिकेटी खप नाशिल्यान आमचेर सारको काळ आयिल्ला वरी दिसलें. दुसऱ्या दिसाय सारक्यो तिकेटी खपल्यो ना. मागिर भावे सराच्या मार्गदर्शनाखाला सगळ्यो तिकेटी खपयल्यो.

हावेन थिएटर म्हणता ते केन्ना पळोंक नाशिल्ल्यान म्हाका एक वेगळीच उमेद दिसताली. हांव मनांत चित्तालें की थेटर म्हळ्यार किदें काय? तातूंत लोक कशें बसतात? फिल्म कशें दाखयता काय? अशें खूपशे प्रश्न म्हाज्या मनांत येताले. जेन्ना हांव थेटरान पावलें तेन्ना ह्या सगळ्या प्रश्नाचो जापो म्हाका मेळ्ल्यो. पयलें फिल्म हें 'ओ मारीया' दाखयले हें फिल्म सोपल्या उपरांत चर्चासत्राक सुरवात जाली. तातूंत ह्या फिल्माक आधारून माचेवयल्या सोयऱ्यांक प्रश्न विचारताले आनी राजेंद्र तालक हे तांच्या प्रस्नाचो जापो दिताले. ह्या फिल्माचे लेखक वांगडा आशिल्यांन भुरग्यांक समजून घेवपाक बरें मेळ्ळें, 'ओ मारीयाक' चड गर्दी नाशिल्ली. पण 'पलतडचो मनीस' हे फिल्म पळोवपाक मात थिएटर सारके भरिल्लें.

स्वेता देसाई
पयलें वर्स, कला

तरणाट्यांक लागला पिशें सोशयल नेटवर्किंग सायटीचें

इंटरनेटाचो उपेग करपी कॉम्प्युसॅव्ही नेटिझन्स, लोकांकडे संपर्क करपाखातीर तशेच नवे संपर्क निर्माण करपाखातीर एक, नवी सोशयल नेटवर्किंग वेबसायट तयार करपाचो खुपश्या जणांचो यत्न चालूच आशिल्लो. तातूंतल्यान ऑरकूट, फेसबूक, ट्विटर, मायस्पेज, बेबो ह्या सारख्यो सोशयल साईट्स अस्तित्वांत आयल्ल्यो आनी थोडेच वेळाभितर जगभर नामना मेळयल्ली. तरणाट्यांक तर ह्या सायटीनी पिशें लावन सोडला. फकत तरणाटींच न्हय तर जगभरांतले सगळे लोक ह्या सायटोंच्या मोगांत पडत आसात. आपणे काडिल्ले फोटो, व्हिडीओ, जिणेंत आयिल्ले अणभव उक्तावपाची माची ह्या सायटींनी दिल्या. तरणाटे आपल्यो कविता, निबंध, लेख ह्या सायटींचेर घालतात जेणे करुन सबंध जग ते वाचूंक शकता.

ह्यो सायटी तयार करपाचो मुखेल हेतू इतलोच आशिल्लो की आमी घराबसून तरेकवार लोकांकडेन आपली वळख वाडोवपाची, नवी इश्टागत करपाची. भारतांत तर विदेशाभशेनूच लोकांक ह्या सोशयल नेटवर्किंग सायटीचें पिशें लागला. २० हजार भारतीय आयज ह्या सायटींचेर आसात. भारतात ओर्कुटाचें सगळ्यांत चड वापर जाता. ह्यो सायट्स आमका टायमपास करपाक एकदम बऱ्यो. पूण ह्या सायटींचेर आसात. भारतात ओर्कुटाचें सगळ्यांत चड वापर जाता. ह्यो सायट्स आमका टायमपास करपाक एकदम बऱ्यो. पूण ह्या सायटीचो खूप दुरुपेग जाता. ह्या सायटींचेर दोळे धापून विश्वास करुंक जायना कित्याक तर चडशे लोक आपणाली खरी म्हायती दिनात. ताका लागून फटोवपाची खूप व्हडली शक्यताय आसता. फेक अकांउंट जायते आसात. हे चड करुन फिल्मी अभिनेत्र्यांचे वा स्पोर्टस् स्टारांचे चड प्रमाणात फेक अकांउट आसतात. ऑर्कुटात तुमका घे म्हणून शाहरुख खान मेळटले जाल्यार फेसबुकांत जायत्यो करिना कपूर आसतल्यो.

ह्यो सोशयल नेटवर्किंग सायटींचे एकदां चटक लागली की मागीर तातूंतल्यान सुटप सामके कठीण. ह्या सायटीक कसलीं तरी चुंबकीय शक्ती आशिल्ल्याभशेन आमी परत परत ह्या सायटीचेर वचूंक लागलात.

ऑरकुट, फेसबुक कितें कमी आशिल्ले ? आता आमच्या माथ्यांत ट्विटर चें पिशें भरलां. ह्या सायटीचेर वचून तुमी मिनटा मिनटां कितें करतात ते द्याला. मागीर तुमका तुमचे इश्ट आनी हेर लोक ह्या सायटीर फोलो करतात. आनी अशे करुन एकमेकांच्या संपर्कात उरतात.

अश्यो ह्यो सोशयल नेटवर्किंग बऱ्याक बऱ्यो आनी वायटाक वायटां पूण जर खंयच्याय बऱ्या गजालीचो जर अतिरेक जालो जाल्यार आमकां फायदो उणो आनी लुकसान चड जातले. म्हणून आमी आमच्या मर्यादिन रावून ह्या सायटीचो वापर करुंक जाय. ह्या सायटीचेर वचून अभ्यासाकडेन दुर्लक्ष करप ही सगळ्यांत व्हडली चूक. आमकां चटक लावन सायट मालक करोडपती जाता आनी आमी मात आमच्या जिणेचो धूप करून उडयता. ह्या सायटीचो वापर थोड्या प्रमाणांत टायमपास म्हूण करुंक जाय आनी मागीर out of sight is out of mind प्रमाण विसरुन वचूंक जाय.

बालाजी शेणवी
तिसरें वर्स, कला

म्हज्या स्वप्नातलें गोंय

''अजीब है ये गोवा के लोग'' अशें पं. जवाहरलाल नेहरुन म्हटलां ते खरेंच. कारण गोंयचें कितें आनी कशें गुणगान गांवचे तेंच समजना. पूण सर्वसामान्य गोंय म्हटले की पयली आमच्या दोळ्यामुखार उबीं रावतात ती म्हणजें पाचवीं शेतां, भाटां, कुळागरां, दोंगर, निळ्यो दर्यावेळो तशेंच सण-परबो, अडलेल्याच्या उल्याक पावपी लोक, काबाड कश्ट करपी शेतकार, माडार चडून सूर काडपी रेंदेर, नाल्ल पाडपी पाडेली, तशेंच कलाकार, धोल ताशांच्या आवाजार ''ओऽसय ओऽसय'' नाचपी मेळगडे, ''श्री धालो गे बाये धालानी खेळोया,'' म्हणपी मांडावयल्यो अस्तुऱ्यो, 'फू बाये फू' फुगडी घालून चवथ रंगोवपी बायलो, दिवली नाच, कुणबी नाच करपी बायलो, गोफ-घोडे मोडणी नाचपी दादले, लोकनाचाच्या आंगान भर घालपी ही संस्कृती गावांगावांनी भरलेलो एकवट, लग्नाक, श्राध्दा-म्हाळाक, बोवाळपी शेजारी, वासपुशेक येवपी सोयरी-धायरी आनी मानशिंनी गरोवपी-पागपी कोळी समाज अशें हे कालचें गोंयचे चित्र जावंन आसा. आयज हे सगळें खंयच्या दिकां शेणलें काय ?

हें चित्र हळूहळू करुन बदलत गेलां. आयज गोंयची स्थिती खुपूच बिकट जायत गेल्या. आयज पयशांक खूप वालोर आयला. मनीस मनशांक नागवोंक लागला. खून, दरोडेखोर, मारामारी ही प्रकरणां खूब वाडल्यात. राजकारण्यांनी चलयल्ली ही भश्टाचाराची पध्दत सगळ्यांक पिडूंक लागल्या. भायल्या लोकांची वस्तीय वाडत चल्ल्या. मतांक लागून राजकारण्यांनी हाडून दवरलेले बिगर गोंयकार, खरेंच गोंयाक उदरगतीच्या मळार पावयता काय ? असो प्रस्न दर एकट्याक पडपाक लागला. आयज गोंयान रावपाक खूप कठीण जालां. गोंयकारांक एक वेळ रावंक जागो मेळना पूण भायल्या लोकांक तो कांय न्ही करुन मेळपाक लागला. सॅज, मॅगा आयल्ल्यान दोंगर बोडके केल्यात, न्हंयत कॅसिनो बोटी हाडल्यात, चरस, अफू, गांजा, कोकेन या धुंवळी वखदात आयचो युवा सापडला पयशांच्या आशेन सगळेंच उदवस्त जायत गेला.

सोबीत सुंदर गोंयाक आमच्या आमीच पावणेर काडलां. सगळे गोंयकार गोंय विकपाक उठल्यात. हांगाची झांडा कातरुन आतां कॉंक्रिटाची जंगला उबी केल्यात. पयशांखातीर व्हड व्हड रानां कापून लाकडांचो काळो धंदो चलयता. तशेंच वचत थंय मिनाच्यो खाणी उभारल्यात आमी पयली पांचवो सैम म्हण्टालो तो आतां तांबडो जाला. गोंय इल्लें इल्लें करुन पोखरुंक लागल्यात. रानातलीं जनावरां आतां घरांन भितर सरुंक लागल्यात. कॉंक्रिटांतल्या घरातल्या लोकांक आतां घुस्मटून मोरुंक पुरो जाला. रस्त्यार गाड्यो चड जाल्ल्या कारणांन धुल्ल प्रदुषण जाता. हो धुल्ल सोसपाक आतां झाडां नात. हो धुल्ल आतां मनशानींच सोसचो पडटा. हाका लागून कितलेशेच लोक दुयेंस पडूंक लागल्यात. दुयेंसाची संख्या दिसान दिस वाडत चल्ल्या. तशेंच कितलेशेच ॲक्सीडेंट जावंन तरनाटेच मरणाच्या दारान गेल्यात. गोंयांत पन्नासाच्या वयर कोणूच चड काळ जगना. कारण ॲक्सीडेंट आनी वेगवेगळी तरेची दुयेंसा, आतां नवे नवे कारखाने उबे जाल्यात आनी उबे जायत रावतलेय. या कारखान्यांनीं

तर खुपूच धुमाकुळ घातला. ह्या कारखान्यातली दुषीत हवा वाऱ्यावांगडा मिसळून वारो आतां विखारी जायत गेला. या कारखान्याचो रेंबो दर्यान सोडता. हाका लागून उदक दुषित जायत गेला. तेचबरोबर उदकातली नुस्तींय मरपाक लागल्यात. तशेंच प्लास्टीक इतलें वाडला की नश्ट करपाकय ते मेळना. हांका लागून शारांनी खूप समस्या निर्माण जाल्यात. पोतयो खांवन गोरवांची मरणाची संख्या वाडत आसा. तशेंच या प्लास्टिका लागून ॲक्सीडेंटय जातात.

पयलीं दर्यावेळांचेर धवीफुल्ल रेंव आनी निळें, पाचवें उदक दिसतालें ते आतां दिसना. आतां थंय प्लास्टीक बाटल्यो, पोतयो, दिश्टी पडटात. प्लास्टिक आनी हेर अ-जिवीक कोयराक लागून सैमाच्या चक्रांत आडखळ आयल्या. आमच्या ह्या विज्ञान युगात सुध्दा बरे बरे सुसंस्कृत लोक अनपढाबशेन वागतात. देखीक शारांनी कचऱ्या पेट्यो आसूनसुध्द लोक कोयर त्या पेट्यांनी उडयनात. लोक दोन-तीन हात पयस रावून कचऱ्या पिपांमुखाल्ल्यान शेवटून कोयराच्यो पोटल्यो उडयतात. ह्यो पोटल्यो पिंपात पडनासतना पिंपाक आपटून रस्त्यार पडटात. हाका लागून अर्धो रस्तो हो कोयरान न्हांवन गेल्लो आसता. तेन्नाच थंय गोरवां, सुणीं यतात आनी त्यो पोटल्यो फोडून कोयर हांगा थंय करतात. जे कोण ह्या रस्त्यावयल्यान वतात तांका ह्यो घाणी घुट्टाणी सोसच्यो पडटात.

आयज सगळे वटेन गोंय काबार जायत चल्लां. जाण्टेल्यांची भाटां-बेसा नेण्टेल्यांनी विकून खाल्यात. गोंयची संस्कृती लोक पुराय विसरुन गेल्यात. जशें चड शिक्षित जायत गेल्यात तशें सगळें corrupt जायत गेल्यात. आयज मनशांकडेन दुसऱ्या मनशांक दिवपाक वेळ ना. तांका तीन वर्सा जाली रे जाली केजीन चिड्डितात तांच्या फाटिर खेळपाच्याच दिसांनी शिक्षणाचे वजे दितात. त्रिकोनी कुंटुंब आशिल्ल्यान पाळणाघरांन तांका दवरतात. आजो-आजी, काका-काकी अशी मायेची मनशां तांका समजूवपी मेळनाशिल्ल्यान भुरगीं व्हड जाता तशीं एकमुळी जायत वतात. आनी आत्महत्या करपाक प्रवृत्त जातात. तशेंच चलयांक फुलच्या फळच्या पयलींच क्रूर राक्षस येवंन पिसुडटा. कांय आवय-बापूय तर जबरदस्तीन भुरग्यांच्या इच्छेविरोध वागलेले दिश्टा पडटात. जर त्या भुरग्यांकडेन ते क्षेत्र जमना तरी आपल्या status लागून आवय-बापूय त्या भुरग्याचे जीवन पिड्यार करतात. जर फेल जालो जाल्यार भुरग्यांकच दोषी धरतात. हाका लागून चडशे भुरगे सोरो, मटको, जुगार हांच्या वाटेन वतात.

सरकारी ऑफीसांनी लांच घेवंन नाका आसतनाय कामगार वाडयल्ले दिश्टी पडटात. पुलिस, कायदो, सरकार सगळें भ्रश्टाचाराच्याच चेंपणाखाला आसा. खून दरोडेखोर, बलात्कार करपी न्यायदेवतेकय पयशांनी फटोवन सुटलेले आमकां दिश्टी पडटात. हाका लागून गरीब लोकांक न्यय मेळना. तो कितलोय खरो आसलो तरी पयशांक लागून ते करता, हे आयचे चित्र पळोवंन मनाक भंय पडला कि यता त्या धा वर्सांभितर हे सगळें सोंपतलें. झाडा ना शेतां ना, जनावरां-सुकणीं कोणूच ना. फकत मनीस आनी पयशेच आसात. मनीस उदकाकय पातिशेर जातलो. तेन्ना तो एकामेकांक खांवन, तांचे रगत पिवोंन जगतलो काय ? घरां, बंगले सगळें कित्यें आसा पूण हो सैमच जर काबार जालो जाल्यार कित्यें ? गोंयच्या सैमाचे गुणगान फुडली पिळगी फकत इतिहासातच शिकतली काय ? ह्या सगळ्या गोष्टींचो विचारुच केल्यार

आंगार काटो फुलता. जर गोंय हे सगळ्यांपासून मुक्तजातले जाल्यार परत एकदा लढचे पडटले. जर ते मुक्त जालेच जाल्यार म्हज्या स्वप्नातले आसतलें.

म्हज्या स्वप्नातलें गोंय हे सोबीत, सुंदर आसतले. दादल्यांच्या खांदाक खांदो लावंन बायलोय राजकारणात पावल घालून गोंयची स्थीती बदलतल्यो. आदल्योवरीच मेळ, फुगडी, धालो, लोकनाच हांचे पडबिंब पळोवंक मेळटले. शिकलेले लोक सरकारी नोकरेच्या फाटल्यान लागनासतना आपली शेतां, भाटां, कुळागरां पिकोन खातले. नवें नवें तंत्रज्ञान वापरुन भाजी, फळा, फुला पिकयतले. जेणेकरुन भायल्या राज्यातल्यान गोंयाक हाडपाची गरज पडची ना. गोरवां, बोकडां पोसून तांच्या दुधाचो धंदोय कांय लोक करतलें. तशेंच जे जाण्टेल्यांचे दायज आसा ते गोंयचे लोक मुखार व्हरतले. फुडल्या पिढि मुखार सैमाचे प्रस्न, कर्चऱ्याच्यो समस्या निर्माण जावंच्यो नात.

जे आयज दोंगर कापल्यात थंय परतून एकदा सैम उबो जातलो. मागीर आमकां क्रॉन्क्रिटाच्या जंगलान झाडाय दिश्टि पडटली. हांका लागून परत एकदा पशू-पक्षी त्या रानांत पावलां दवरितले. पूण मनशांन मात आडखळ तांका हाडपाक जायना. ज्यो मिनाच्यो खणी आसात त्यो कमी प्रमाणात चलोवपाच्यो जेणेकरुन निर्सगाची चड नुकसान जावचें ना हाची जापसालदारकी घेवपाची. प्लास्टीक वापरप बंद जातलें. मोबायल, इंटरनेट हांचे भितर चड गुल्ल जायनासतना मनीसपणय राखून उरतलें. गोंय हे पुराय साक्षर जातलें. कोणूच अनपढ उरचोंना, कायदो खरसाणेंने पाकिल्ल्यान खून, बलत्कार केन्नाच जावंचे ना. गोंय हे एक आदर्श राज्य म्हूण फामाद जातलें. चोरांक, दरोडेखोरांक योग्य ती शिक्षाय मेळटली. कोणूच पयशांच्या आशेन जगचोना पूण मनीसपणाचेर जगतलो.

राजकारणात बरे बरे शिक्षित लोकूच पावतले. जशें एक शिक्षकच शिक्षणमंत्री, एक बरो खेळगडोच खेळमंत्री. एक दोतोरुच भलायकी मंत्री, एक आदर्श इंस्पेक्टरच घरमंत्री, एक आदोवगादच कायदो मंत्री. अशेंतरेन जश्यो तांच्यो वेगळ्या वेगळ्या क्षेत्रांतल्यो पदव्यो पळवोनच तांका ती ती मंत्रीपदां दितलें. तशेंच घरां घरांत पयलीं वरींच आनंदाचें वातावरण आसतलें. झगडीं, मारामाऱ्यो बंद जातल्यो. तशेंच गावां गावांतली, शारांतली बार्राय बंद जातली. आनी जो गोंयांत सोरो काडटात तो फकत भायल्या देशांक विकतलो. चडशे गोंयकार आपलोच धंदो चलयल्ल्यान रस्त्यारय येरादारी कमी जातली. हाका लागून ॲक्सीडेंट, हवा दुषीत जावची ना. दुयेंसाय कमी जातली. चडशे लोक घरांच आशिल्ल्यान तांच्या भुरग्यांचेर बरे लक्ष उरतलें. भुरगींच आपली सुखा-दुखां आवय-बापायकडेन वाटून हांसून खेळून रावतलीं. ज्या भायल्या लोकांची वस्ती हांगा चड प्रमाणात वाडल्या ती हळू हळू करुन आपशींच कमी जातली. अशें हे म्हजें गोंयच्या बाबतीत स्वप्न जावंन आसा. ते केन्ना साकार जातलें हाजीच म्हाका उत्सुकताय आसा.

(निबंद लेकन सर्तींतलें तिसरें इनाम फावो जाल्लो निबंद)

स्वाती चं. बोरकार
तिसरें वर्स, कला शाखा

दुडवादोंगर कोसळटना

सूत्रधार : आयज हांव तुमकां एक अश्या घरांन व्हरता जंय पैशांच्या आशेन घर उदध्वस्त जाता.

बापूय : आगे आयकला.

आई : आयले आं. किदें ?

बापूय : सगळी म्हारगाय वाडल्या गे बाये. ३५ रुपया किल कांदे, वीस रुपया किल बटाट आनी एक नाल्ल म्हळ्यार धा रुपया.

आई : किदें हाडलां ?

बाबा : धा रुपयाचे अर्द कुसलेले कांदे, पाच रुपयांचे बटाट आनी एक नाल्ल येतना वाटेर एका दुकानाचे उद्घाटन करतना फोडलेलो मेळ्ळो. कोण ना सो पळयलो आनी पिशवेन घालो हांव चलत गेलो आनी चलत गेलो आनी चलत आयलो. तितलेच ४८ रुपये वाटवले ना. आं करुन कितें पळयता. चल तें घरान घेवन आनी च्या हाड. (खाक्यांतलो पेपर काडून वाचता) हो कालचो पेपर म्हाका थंय शंभूल्या गाड्यार मेळिलो तो उकललो आनी हाडलो. वोगीच तीन रुपया कित्याक उडय? नायजाल्यार ताका फाल्या वालोर ना. कालची बातमी आयज वाचली म्हूण कितें जालें.

आई : च्या घेयात (बसता) (तितल्यान भितरल्यान पूत येता) समीर कितें रे ?

समीर : (सकयल वयर जायत) (तितल्यान भितरल्यान पूत येता) म्हाका मगे शंभर रुपया जाय आशिल्ले.

बाबा : किद्याक ते फोल्गा मारुंक ? पैशें किते झाडाक पिकतात ?

समीर : बसी तिकेटी जाय. या दिसांनी पाडपडलेलो कंडक्टर फुल तिकेट काडटा. सांगल्यार म्हण्टा तुका मिश्यो फुटल्यो तरीय हाफ तिकेट.

बाबा : कोण तो कंडक्टर ? मुस्काट फोडून काडटलो म्हूण सांग ताजें.

आई : आसूं आं. पुरो पुरो....।

समीर : बाबा पयशे.

बाबा : फायच्यान तूं पायांनी चल. पायांनी यो. (समीर वता) जाणां म्हगे आमचो मदलो पुतूच बरो शंबर रुपया दीत जाल्यार चोब्बलीन पयशे घरांत हाडटा. नाजाल्यार व्हडलो दिता ते सगळें खल्लास करुन येता.

आई : तो वायट मार्गान बी मेळयना मूं पैशे?

बाबा : तो तर अंदू बारावेक. तो आनी किदे वायट मार्ग आपणायतलो ? ताकाय कोणीय Friend दिता आसत.

आई : मेळटा म्हूण लोकाले वोग्गीच खावप.

बापूय : दिता जाल्यार खावंक कितें जालां? (समीर येता)

समीर : आई म्हाका फी भरुंक पयशे जाय आशिल्ले.

बापूय : कसली फी ? टिचरांक किदें पगार मेळना? उठसुठ तुमचें कडल्यान फी घेता. ते सामकेच बेकार पडल्या कांय कितें ते ?

समीर : चार हजार भरपाचे बाबा.

बाबा : चार हजार? हांवे शंबर रुपया पळयल्यार कितलीं वर्सा जाली. एक सांग रे. ह्या तुमच्या शिक्षकांनी आमचेकडेन जोडून दवरल्यात पयशे? परत परत मागता ते. (इतल्यान श्याम यता)

श्याम : बाबा म्हाका शंभर रुपया जाय.

बाबा : श्याम हें पळय पयशे भितरले आलमारीन आसा. ते काडून घे.

समीर : बाबा तुमचेकडेन पयशे नाशिल्ले न्ही.

बाबा : चूप, मालकिर्याद खंयचो. पयसो एक हाडूंक जायना. उलट तोंड चड.

श्याम : (समीराक तिडायता, हातान कुरवो करता आनी वता)

बाबा : ए पळयता कितें ? चल भितर (समीराक) (शमी यता) तू आनी किदें वाट्या आयलां?

शमी : बाबा फाल्या पालक शिक्षकांची मिटिंग आसा.

बाबा : त्यो म्हगो बेश्टोच दवरीतात. फकत भुरग्यांक अभ्यासाक बसयात म्हुण बोबो मारतात. नसती साडेसाती. आमच्या बोल्सातले धा रुपये वगडायतात आनी दितात किदें? एक पेलो दुधाच्या आनी दोन मेरी बिस्कीटी. म्हाका एका सांग त्या च्याक लागून धा रुपया वगडावपाचे?

सूत्रधार : पळयलें? बापायक पयशांक लागून आपल्या भुरग्यांच्या शिक्षणाचेंसुध्दा पडलेलें ना. तर पळयात ही भुरगी फुडें कसो उजवाड घालतात तां?

■

समीर : (ओग्गी बसला. तो टेन्शनात बुडला)

हांव सलीमाक कसो हारायतलों. हांव वर्गान पयलो येतलो म्हूण पैज मारलेली ती आता शेळेली. तो जिकलो. हांव कितें करुं? (रडलेलें तोंड करता. तितल्यान श्याम येता.)

श्याम : एय रडटा कित्याक? आस्था चेनल पळय. रामदेख बाबा सारको Solution दितलो.

समीर : व्हडल्याकडेन तूं अशे तरेन उलयता?

श्याम : कोण व्हडलो ? हांवूच. म्हज्याकडेन चड पयशें आसा. देखून हांवूच व्हडलो. (मोबाईल काडटा बट्टन दाबता)

समीर : आरे हो तुका फोन कोणे दिलो ?

श्याम : तुका कित्याक ? तू ओगी राव 'ये तो शुरुवात है. आगे आगे देखो क्या होता है । हॅलो मोर्त्या कितलो नंबर आयलो रे? आं बरे. आनी एक कर ५० सातांचेर उडय आनी पन्नास १५ चेर उडय. बरें. बरें.

समीर : आरे तूं शिकपा सोडून मोटको लायता? तुजी बारावी मरे? अभ्यास कर.

श्याम : तुजेभाशेन आमी पुस्तकांतले किडे न्हंय. शिकोन कितें करतलें? पयशेंच जोडटले नी? त्यापेक्षा आताच जोडलेले बरे. तुजे भशेंन बापायचें फुकट सवाय खावपी न्ही. (श्याम वता आनी शमी यता)

शमी : जाणा मरे भाई, तो राजू काका काल कोणा सांगतालो आमचो श्याम भैया गुंडा जाला म्हूण. तो केन्ना केन्नाय चोंरुकय वता खंय.

समीर : तो आयकना. तूं लोकाल्या सांगण्याचेर लक्ष दिवं नाका. तुजो अभ्यास कर.

शमी : जाणा मरे भाई. आई काल बाबाक सांग श्याम भैया या दिसांनी रातचो दोनां-तिनांक येता म्हूण. पूण बाबा ओग्गी रावलो. (श्याम यता)

श्याम : एय, कितें फुतफुतता? हाव आसां म्हूण हें घर चलता. अशे हांगा यो गो. भियो नाका हांव तुका खायना. त्या तुमच्या हेडमास्तराचे नांव किदें गो ?

शमी : लक्ष्मण पाटील.

श्याम : आरे घांट्या. गोंयांत येवन आमकां बुद्द शिकयता? हांवे चोरला म्हूण पुलिसस्टेशनाचेर कंप्लेन करता. राव, शिकयताच तुका. (वता)

शमी : पळयले मरे भाई, लोक सांगता ते फट न्हय (बुकांत तोंड घालता)

आई : अभ्यास करता मगो बाय. वार्शिक परिक्षा लागीं पावली.

शमी : हय आई. आई, बाबा बाजाराक गेला गे ?

आई : ताजे आनी कितें काम. सांजेची भाजी सवाय मेळटा म्हूण सांजचे बाजाराक वचप आनी येतना अर्दे कुसलेलें घेवन येवप. (बाबा येता चप्पल काडटा तितल्यान एक चली येता.)

चली : काकी, श्याम भरपूर पिओन रस्त्यार पडलेलो आसा. ताका ॲक्सीडेंट जालो.

सगळी : कितें ? (आई रडटा)

समीर : आतां आनी रडोन कित्यें फायदो ? जर बाबान हे पाप म्हूण सांगलेलें जाल्यार आयज श्याम ॲक्सीडेंटांक बळी पडचो नाशिल्लो. बाबा पयशांच्या आशेन सगळें विसरलो. घरात बाबाच्या वयर कोणूच उलोक शकनाशिल्ल्यान आई वोगीच रावताली. ताजो हो परिणाम. चलात हॉस्पीटलांत (बापूय तकलेर हात धरुन बसता)

बापूय : पयशांक लागून हांवे म्हज्या चल्याचें जिवीत पिड्यार केलें. फीक लागून समीराचे शिकप बंद केले. हांवेन पोटाक खायनासतना काटकसरीत जमयल्ले दुडू, आतां ते दुडू दोतोरांक आनी वखदाक दिवचें पडटले. देव दिता आनी देवचार नाडटा. पूण काळे पयशे केन्नाच घरांत उरना, त्याखातीर तुमकां सगळ्यांक म्हजी विनंती. वायट मार्गान दुडू कमाव नाकात. कितें करता ते सत्यान करात. दुसऱ्यांच्या त्रासाचो दुडू केन्नाच म्हजो जायना. आनी मतीन धरात त्रासाबगर केल्लो दुडवादोंगर केन्ना ना. केन्ना एक दीस कोसळटाच. जसो आमचो कोसळ्ळो तसो.

स्वाती चं. बोरकार
तिसरें वर्स, कला

सपनांतल्या सपनफुला

सपनांतल्या सपनफुला
केन्ना काळजांत परमळटलें तूं ?
रंगबेरंगी रंग घेवन
केन्ना जिणेंत येतलें तूं ?

म्हज्यो राती जागोवपाक
केन्ना जागर घालतलें तूं ?
दरेक म्हज्या भावनांचो
केन्ना ताबो घेतलें तूं ?

हांव आसा आसुसलेलों
केन्ना दर्शन दितलें तूं ?
जिविताची वाट चलपाक
केन्ना सांगात दितलें तूं ?

जिणेंत म्हज्या रुप दिवपाक
केन्ना सांग येतलें तूं ?
म्हज्या मोगाचे कळये
केन्ना सांग फुलतलें तूं ?

चंद्रकांत आर. नायक
तिसरें वर्स, कला

खेळ मोगाचो

रुप तुजें पळोवन
भुल्लां पळय हांव
उलो मारता तुका
आसा तशें धाव

सदांच तुका पळयतां हांव
मनातल्या मनांत फुलता हांव
तुज्याच मोगाची फुलां
सगळ्यांक शिपडींत भोंवता हांव

पयसुल्ल्यान तुका हांव
सदांच पळयत आसतां
तूं म्हाका दिसलें ना जाल्यार
काळजांत हुरहूर लागता

मोगान तुज्या पिसो जावन
चोंयवशीन तुका सोदतां
याद तुजी येता तेन्ना
रातभर सपनां पळयतां

खेळ हो मोगाचो
तुजे कडल्यान शिकलों
तुज्या मोगान हांवे
जिणेंत गंध भरशिलो

चंद्रकांत आर. नायक
तिसरें वर्स, कला

गोंय

सोबीत, सुंदर शांततायेचें
शेतां, मळ्यांनी सजलेलें
फुलां, फळांनी नटलेलें
पाचवेंचार तें आमचें गोंय

विंगड विंगड भाशांनी भरलेलें
तरेतरेच्या लोकांनी गजबजलेलें
कुळे ते पत्रादेवीमेरेन वसलेलें
संस्कृतीमय तें आमचें गोंय

कश्ट करून जगप्यांचें
प्रामाणिकपणान रावप्यांचें
अडलेल्यांच्या उल्याक धावप्यांचें
समजुकायेचें, तें आमचें गोंय

गावा गावांनी जोडलेलें
सणां परबांनी भरलेले
लोककलांच्या रंगान फुललेलें
कलामय, तें आमचें गोंय

असलो हो एकवट
जालो आतां इतिहासजमा
सगल्यांक धापले पुस्तकांत
टिव्हिमय, तें आमचें गोंय

राज्य कळसुत्री बावलेचें
राजकारण्याच्या हातच्या दोरयेचें
वोडटा तशें धावपाचें
दुबळें तें राज्य आमचें गोंय

काळे धंदे भ्रश्टाचारांचे
बलात्कार, खून, दरोडेखोरांचे
न्यायदेवतेक पयशांनी फटोवपाचे
पयशेंकारांचें तें आमचें गोंय.

पॅट्रोल, डिजल म्हारगायेचें
गरीब, दुबळ्यांक उपासमारीचें
फकत पयशां फाटल्यान धावपाचें
आंदोलनाचें, तें आमचें गोंय

चड जालें गुणगान
सहन केले अपमान
आतां दादागिरी चलची ना
तरनाट्यांच्या भुजार रावतलें
घटमूट तें आमचें गोंय

खूप जाल्यो शपथविधी
भाशणांचीं जालीं फटींगपणा
एक दीस तरनाट्यांची उदेंतली सकाळ
सुखी, आसतलें तें आमचें गोंय

स्वाती बोरकार
तिसरे वर्स, कला

गोंयकारांनो

गोंयकारा, गोंयकारा, गोंयकारा
गोंयचे दायज कित्याक रे नाका ?
सोबीत, सुंदर दोंगर म्हण्टा
कित्याक रे म्हाका मारता ?

निळो निळो दर्या व्हांवता
कित्याक रे ताका कॅसिनो आडायता ?
शांत दर्यावेळो न्हिदता
कित्याक रे ताका रेंव पाट्यों जागयता ?

पांचवी शेंतां, कुळागरा हांसता
कित्याक रे तांका विकता ?
गोंयचीं संस्कृताय पर्यटकांक भुलयता
भोंवडेकार गायता तुजी व्हडवीक
खंयूय उडोंवंक मेळटा म्हूण प्लास्टीक

गोंयकारा, गोंयकारा, गोंयकारा
गोंयची एकवट कित्याक रे नाका ?
अडीअडचणींक पावपी शेजाऱ्यांचे
बंद जाले विंडो
उक्ते जालें कॉम्पूटराचे विन्डो

पाचवो सैम तांबडो जालो
दुडवांच्या दोंगरार मिनैर हांसले
हासतना हळूच दांत लिपयले
जाली कॉन्क्रिटाची जंगलां
उबे जाले कोंयराचें दोंगर
बॉल्सां भरलीं उदरगतीच्या नांवांन
मनीसच जालो मनशांचोच दुस्मान

गोंयकारा, गोंयकारा, गोंयकारा
गोंयची संस्कृती कित्याक रे नाका ?
मेळ, फुगडी, धालो
गावचो एकवट शेणलो

मांडो, गोफ, घोडेमोडणी
गोंयकारांनी वगडायले लोकनाच
विदेशांनी आपणायले हे नाच

गोंयकारा, गोंयकारा, गोंयकारा
आदले गोंयकारपण कित्याक रे नाका ?
काबाड, कश्ट काडपाची तयारी
फक्त पडली भायल्यांच्याच पदरी ?
घाम आटोवन केल्लो पुर्वजांचो पयसो
कित्याक रे वाऱ्यार उडयलो असो ?

गोंयकारा, गोंयकारा, गोंयकारा
कित्याक रे नाका पयलीचें सामसूम
गजबजलो आम आदमीचो प्रचार
हळूच जालें भायल्याचेंच सरकार
आयिल्याक फॅना पोंदा बसपाक
आयिल्लो घाम, पयशांन आटोवपाक

पदेर, नुस्तेकान्न, रेंदेर
जालें काळांतरान काबार
पुर्वजांनी दिल्ली सासाय
आसा शेणपाचे वाटेर
आसा शेणपाचे वाटेर

(काव्यलेखन सर्तींतले दुसरें इनाम फावो जाल्ली कविता)

स्वाती चं. बोरकार
तिसरें वर्स, कला शाखा

अशी कशी गे तू.....?

णव म्हायने आपल्या गर्भांत दवरून
जल्म दिलो तुवेन म्हाका
तेन्ना संवसारांतली सगल्यांत
व्हड खोस भोगली
आसतली तुका

केन्ना कोणाची बायल
केन्ना कोणाची काकी
केन्ना कोणाची सून
तर
केन्ना कोणाची चली, सांगशीत
म्हाका
कशी जपून दवरता गे
तूं सगळीं हीं नातीं ?

सगळ्यांचीं मनां तूं पारखिता
आपलें सुख पयस दवरुन
दुसऱ्यालीं तान भागयता
अडचणी वेळार आपल्या
तोंडातलो घास तू
दुसऱ्यांचा पोंटात घालता
तरी पूण
फाटल्यान सगलीं तुकाच
कित्याक कोसतात ?

तरी पुण
कोणाच्याच थोमण्याची
पर्वा करिनासतना तूवें
केलें ल्हानाचे व्हड म्हाका
खरेंच....

तुका देव म्हणपाचें काय
जादूगार हेंच कळना
जालां म्हाका.....

पुन्वी बीचे
दुसरें वर्स, बी.ए.

पावसा पावसा यो

पावसा पावसा यो
मळबांतल्यान सकयल देवोन
झाडांक उदक दिवंक यो

पावसा पावसा यो
व्हाळ नद्यो दर्या रंगोवन
म्हज्या मनाक भिजोवंक यो

पावसा पावसा यो
गडगडोन कडकडोन
शेता भाता पिकोवंक यो

पावसा पावसा यो
काळीं काळीं कुपां फोडून
धर्तरेक आमच्या न्हाणोवंक यो

मंजाली व्ही. नायक
पयलें वर्सं, बी. ए.

ऊठ नागरिका ऊठ

हे भारत देशा, तुजें कांय खरें ना
आतांकवादापासून वाचपाचो
तुजो कांय भरवंसो ना

चोरी, घुसखोरी, गुंडागर्दी आयज वाडटा
देश आमचो आतंकवादी लुट्टात
दिसा धवळ्या देसांत मारामाऱ्यो जातात
मंत्री, अधिकारी सगले तमाशा पळयतात

आमचे मोलाचे काश्मीर आमचे उरलें ना
बांगलादेशाची घुसखोरी अजून बंद जावंक ना
रावणाच्या लंकेचो भंय आजून सोपूंक ना
पाकिस्तानी आतंकवादी भस्मासुरूय कमी जावंक ना

मंत्री अधिकारी आपलोच स्वार्थ पळयता
देशाचे उदरगतीचो विचार कोण करता ?
जण एकलो आपली बोल्सां घट करता
देसाक भितरल्यान पोखरून उडयतात

हे सगळें खंय तरी बंद उडोवपाक जाय
सगले नागरीक एकठांय येवंक जाय
आनी हाचेर तोडगो काडूंक जाय
आतंकवादापासून देसाक मुक्त करुंक जाय

ऊठ नागरीका ऊठ, जागो जा
हो साद घालुंया
सगले एकठांय येवया
हांगासरलो आतंकवाद नश्ट करुन
हे सुंदर भुयेचे नंदनवन करूंया

(काव्य लेखन सर्तींतल्ले तिसरें इनाम फावों जाल्ली कविता)

साईश अ. देसाई
तिसरें वर्स, कला

म्हजें मन

म्हजें मन हें म्हणटा
म्हजें मन तें म्हणटा
म्हजें म्हाकाच कळना
अशें हें किद्याक वागता

केन्ना खोशी जातगीर
शेवण्या परी उंच उडत रावता
केन्ना कोणे किदें म्हटलें जाल्यार
रागान फुगोन बसता

केन्नाय चिंतपाक बसलें जाल्यार
रंगीत सपनां रंगयता
केन्ना ल्हान भुरग्यापरी
पिश्याबशेन वागता
मागीर सदांच चित्तां
अशे हांव कित्याक वागता

दिव्यान वात पेट्टा परी
केन्ना शांत बसता
तर केन्ना सुटलेल्या वाऱ्या परी
आपले रंग बदलत आसता.

म्हज्या मनाक किदें जाय
केन्नाच समजूंक शकपाना
मनान उठ्ठात वादळां कितलीं
केन्नाच थांबोवंक शकपाना
केन्नाच पालोवंक शकपाना.

सोनाली बी. नाईक
पयलें वर्स, विज्ञान